शतदल
प्रमुख-परिमल

ब्रह्मस्वरुप प्रमुखस्वामीजी महाराज के 100 प्रेरक जीवन प्रसंग

स्वामिनारायण
BAPS

बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण संस्था
सत्संग प्रवृत्ति मध्यस्थ कार्यालय
शाहीबाग, अहमदाबाद - 380004

1. ...तब वे खड़े नहीं हुए!

दिनांक : 13 जून, 1988

इस दिन प्रमुखस्वामीजी महाराज को कनाडा की सरकार ने अपने संसद भवन में चालु सत्र में आमंत्रित किए थे।

उनके आते ही संसद के अध्यक्ष श्री ज्होन फेईझर ने घोषणा की,

'I wish to draw attention of members to the presence in the gallery of Pramukh Swami Maharaj, Head of Swaminarayan Mission...'

(मैं स्वामिनारायण संस्था के वरिष्ठ प्रमुखस्वामीजी महाराज की उपस्थिति की ओर सभी संसद सदस्यों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ।)

इस घोषणा के साथ ही संसद भवन में तालियाँ गूंज उठी।

सबकी नजर आमंत्रित महानुभावो की गैलरी की ओर गई। सभी स्वामीश्री के दर्शन के लिए लालाइत थे। क्योंकि कनाडा के संसद भवन में पहली बार कोई हिन्दु धर्मगुरु ऐसा सम्मान प्राप्त कर रहे थे।

ऐसे ऐतिहासिक अवसर पर जब सभी प्रमुखस्वामीजी महाराज के दर्शन के लिए उत्सुक थे, तब सभी का अभिवादन स्वीकार करने वे खड़े नहीं हुए। वे जिस संत के हाथ में श्रीहरिकृष्ण महाराज की मूर्ति थी (भगवान स्वामिनारायण की चलमूर्ति) उन संत को खड़े होने के लिए कह रहे थे। ऐसा करके स्वामीश्री ने सर्वप्रथम भगवान के दर्शन करवाये। बाद में ही स्वयं खडे हुए।

2. प्रगति का रहस्य

प्रमुखस्वामीजी महाराज की प्रगति का आलेख (ग्राफ) आकाश को छू जाए, ऐसा दिखाई देता है।

मात्र 45 वर्ष में 1100 से अधिक मदिरों का निर्माण,

मात्र 45 वर्ष में 1000 से अधिक युवानों को संतदीक्षा,

विश्व के अनेक देशों की संसद में सम्मान,

'युनो' में एक अरब हिन्दुओं का प्रतिनिधित्व करके धर्मसंदेश का प्रदान, समाजसेवा की 150 से अधिक प्रवृत्तिओं का सफल संचालन....

मंत्रमुग्ध कर दें ऐसे कई कार्य! और अल्प समयावधि में! वह भी किसी प्रकार के लौकिक अभ्यास के बिना! साथ-साथ समता, ममता, स्थितप्रज्ञता, कर्मठता, निर्लेपता, अहंशून्यता जैसे कई सद्गुणों के धारक....

ऐसा बहुत कुछ देखकर एक प्रश्नोत्तरी के दौरान संतों ने प्रमुखस्वामीजी महाराज से पूछा था कि, 'आपकी प्रगति का रहस्य क्या है ?'

तब प्रमुखस्वामीजी महाराज ने कहा था कि, 'प्रगति का रहस्य एक ही विचार है - किस प्रकार से गुरु प्रसन्न हो यह विचार। गुरु सच्चे मिले और गुरु की आज्ञा अनुसार जीवन बनाया। जो भी प्रगति हुई है उसका मुख्य कारण गुरु की प्रसन्नता, गुरु की दृष्टि और गुरु के आशिर्वाद है।'

3. सदा स्थिर किस प्रकार ?

'मान-अपमान के प्रसंग हो जाने के बाद मानो कुछ हुआ ही नहीं है, ऐसा आप किस प्रकार रह सकते है ? ऐसी स्थितप्रज्ञता के पीछे कौन सा विचार है ?' - प्रमुखस्वामीजी महाराज की जीवनशैली को देखकर उनको यह प्रश्न पूछा गया था।

तब उन्होंने बताया कि, 'मान-अपमान के प्रसंगों में कैसे भगवान और गुरु प्रसन्न हो ऐसा विचार रखकर हम प्रसन्न होकर रहे तो किसी प्रकार की चिंता नहीं रहेगी। सभी समझते है और मैं नहीं

समझता हूँ, ऐसा माने। सब हमसे बड़े है, हम छोटे है ऐसा समझे। यदि ऐसा भाव हो तो फिर हमारे जीवन में मान–अपमान का विचार या संकल्प नहीं रहेगा और उसका दुःख नहीं लगेगा। उसके विषय में विचार भी नहीं करना चाहिए, ऐसा करने से हमें कोई चिंता नहीं रहेगी।'

4. पहले से ही यह अनुभूति है।

राजकोट में एक सभा के बाद आवास पर पधारते हुए स्वामीश्री को किसी अनजान युवान ने अचानक प्रश्न पूछा,'मुझे एक प्रश्न पूछना है ?'

प्रमुखस्वामीजी महाराज ने भी संमति देते हुए कहा, 'पूछो।'

उसने पूछा,'क्या आपने भगवान के दर्शन किये है ?'

प्रमुखस्वामीजी महाराज ने कहा,'किये है इसलिए ही तो आनंद है और देखे है इसलिए तो (भगवान की) बात करते है।'

उस युवान ने कहा,'आपको (भगवान के दर्शन) तादृश्य ही है ?'

'हां, तादृश्य ही है।'

'तो, मुझे दिखाईए।'

'ऐसे नहीं दिखाई देते। गुरु के वचन में विश्वास रखकर पुरुषार्थ करना चाहिए। मुझे तो गुरु में साक्षात् भगवान के दर्शन होते है।'

एक प्रतिष्ठित पत्रकार ने भी बोरसद में प्रमुखस्वामीजी महाराज से ऐसा ही पूछा, 'आपको भगवान का सर्वप्रथम अनुभव कब हुआ था ?'

तब प्रमुखस्वामीजी महाराज ने कहा,'पहेले से ही भगवान की अनुभूति है।'

5. उससे अधिक अच्छा करके देना चाहिए।

आणंद में नवनिर्मित एक घर में प्रमुखस्वामीजी महाराज का निवास रखा गया था। उस घर के शौचालय और बाथरुम में नई टाईल्स लगाई थी, परंतु नया निर्माण कार्य होने से टाईल्स पर अभी भी सीमेंट और रंग के दाग लगे हुए थे। जब स्वामीश्री शौच-स्नान के लिए उसमें गये तब उन्होंने दाग देखें। और वे टाईल्स की सफाई करने लग गये। जहाँ तक हाथ पहुँचे वहाँ तक सफाई कर दी। इसे देखकर एक मुमुक्षु स्वामीश्री के पास दौड़कर आए और कहा, 'स्वामी! आप रहने दीजिए। हम कर देंगे।'

और उस मुमुक्षु ने कहा,'यहाँ डेढ़ दिन रहना और इसमें इतनी मेहनत करनी!'

यह सुनकर प्रमुखस्वामीजी महाराज बोले,'यह विचार ठिक नहीं है। करना ही चाहिए। हम जहाँ रहे हो वहाँ से जब निकले तब उनको मकान साफ करके देना चाहिए। उन्होंने हमको जैसा दिया हो, उससे अधिक स्वच्छ करके देना चाहिए। यदि हम साफ करे तो हमारी सेवा हो जायेगी!'

6. आपकी प्रतिक्षा कर रहा हूँ...

सन् 1985 में लंदन में बी.ए.पी.एस. संस्था द्वारा 'कल्चरल फेस्टिवल ऑफ इन्डिया' का आयोजन हुआ था। इस अवसर पर आकर्षक और कलात्मक 'स्वामिनारायण नगर' का आयोजन किया गया था उसके साथ प्रतिदिन भव्य भारत की पहचान कराते, अद्‌भुत कार्यक्रम भी सभा मंच पर से प्रस्तुत हो रहे थे।

प्रतापसिंह परमार अपनी गाड़ी में स्वामीश्री को बिठाकर निज निवास से उत्सव स्थल पर ले जाने की सेवा करते थे। दोपहर में भोजन के समय, स्वामीश्री उनको भी अपने साथ ही भोजन करने

बिठाते थे।

एकबार दिनांक 1-8-1985 को गाडीचालक भोजन के समय दिखाई नहीं दिये। इसलिए स्वामीश्री ने उनको फोन करके कहा, 'बापु! मैं आपकी प्रतिक्षा कर रहा हूँ। आपका भोजन यहाँ रखा है। मैंने भोजन नहीं लिया है। जब आप आएंगे तब साथ में भोजन लेंगे।'

12:40 बजे इस प्रकार फोन करके स्वामीश्री ने 2:10 बजे तक उस हरिभक्त की प्रतिक्षा की। फिर भी वे नहीं आये, फिर से फोन किया। तब प्रतापसिंहजी ने कहा,'बापा! ऐसा लगता है कि, आज मुझे देरी हो जायेगी। इसलिए आप भोजन कर लीजिए।'

यह सुनने के बाद ही स्वामीश्री ने भोजन ग्रहण किया।

7. लाख रुपयें की सेवा

सन् 2009 में दाहोद विस्तार में सत्संगप्रवृत्ति संभाल रहे एक कार्यकर्ता ने इस आदिवासी विस्तार की परेशानी बताते हुए प्रमुखस्वामीजी महाराज से ऐसा कहा, 'स्वामीबापा! यह आदिवासी विस्तार ऐसा है कि, संत सभी घरों में पधरावनी करे फिर भी गाड़ी के डीजल के खर्च जितनी भी सेवा नहीं होती।' तब स्वामीश्री ने तुरंत ही उत्तर देते हुए कहा,'हमें तो अपना खर्च करके वहाँ जाना है। वहाँ हमें सत्संग कराने जाना है, पैसे लेनें नहीं। उनको सत्संग हो यही सबसे बड़ी बात है। सभी व्यसन-दूषण छोड़ देंगे तो जीवन में आगे बढ़ेंगे, इसलिए हमें जाना है।'

सन् 1979 में सुरत जिले के देदवासण, गोपला, वांसकुई आदि गाँवों में बरसते बारीश में प्रत्येक झोपड़ीयों पर नीचे झुक-झुककर लालटेन के प्रकाश में पधरावनीयाँ करते स्वामीश्री के समक्ष एक आदिवासी भक्त ने सवा रुपये भेंट रखते हुए कहा, 'बापा! हमारे पास जो है वह दे रहे है।'

तब प्रमुखस्वामीजी महाराज ने कहा, 'आप सभी व्यसन छोड़कर भगवान की भक्ति करते है, वह हमारे मन लाखों रुपयें की सेवा है।'

8. कांच में से या फ्रेम में से?

सन् 1980 में मोतिबिंद का ऑपरेशन करवाने के बाद स्वामीश्री के चश्मे के नंबर बदल गये थे। इसलिए चश्मे में नये कांच लगवाने के लिए एक हरिभक्त को दिया। उन्होंने चश्मे के कांच तो बदले साथ साथ स्वामीश्री की सस्ती और साधारण फ्रेम को भी बदल दिया। नयी सुंदर और मूल्यवान फ्रेम में नये नंबर के अनुसार कांच लगवाकर, वे स्वामीश्री के पास चश्मा लेकर आये।

इसे देखकर स्वामीश्री ने तुरंत पूछा,'नयी फ्रेम क्यों करवायी?'

उन्होंने कहा,'बापा! यह अच्छी लगेगी।'

परंतु स्वामीश्री ने तो पूरानी फ्रेम रखने का ही आग्रह रखा। वे हरिभक्त भी नयी आकर्षित फ्रेमवाले चश्मे पहने उसके लिए, प्रेम से बहस करते रहे। तब स्वामीश्री ने उनसे पूछा,'मुझे देखना है, वह कांच में से देखना है या फ्रेम में से?'

यह सुनकर वह हरिभक्त मौन रह गये।

स्वामीश्री ने पुरानी सस्ती और साधारण फ्रेम से ही काम चलाया।

9. चाहे भले खर्च हो...

बी.ए.पी.एस.संस्था द्वारा उकाई में आदिवासी बच्चों के लिए उनके अभ्यास के साथ-साथ निःशुल्क भोजन और आवास की व्यवस्था वाला छात्रावास का संचालन हो रहा है।

एकबार स्वामीश्री उसकी मुलाकात के लिए पधारे। निरीक्षण के समय स्वामीश्री ने व्यवस्थापकों से पूछा,'बच्चों को सुबह नास्ते में

क्या देते है ?'

व्यवस्थापको ने कहा,'आलू-पौहें, चने, दूध आदि देते है।'

स्वामीश्री ने पूछा,'कौन-सा दूध देते है ?'

उन्होंने कहा,'पाउडरवाला।'

स्वामीश्री ने पूछा,'वह सभी को पसंद आता है ?'

उन्होंने कहा,'किसी को नापसंद हो तो वे ना भी पीये।'

यह सुनकर स्वामीश्री ने कहा, 'हमें गाय या भैंस का दूध देना चाहिए, जिससे कोई बच्चे दूध पीए बिना ना रहे। बच्चों का शरीर बिगड़े ऐसा नहीं करना चाहिए। खुराक अच्छा मिले, शरीर अच्छा रहे, अभ्यास अच्छा करे और संस्कार अच्छे मिले उस पर अधिक ध्यान रखें। इसके लिए खर्च करना पड़े तो कोई परेशानी नहीं है।'

फिर पलंग पर ओढ़ने के लिए कंबल देखकर स्वामीश्री ने कहा,'यह कंबल सर्दी में ओढ़ने में अच्छे है। परंतु इस पर कपड़े के कवर करा दीजिए, जिससे बच्चे जब ओढ़े तब उन्हे गाल पर चूभे नहीं।'

स्वामीश्री नि:शुल्क सेवा में भी कितना ध्यान रखते है!

सन् 1987-88 के दौरान सौराष्ट्र में हुए अकाल के समय प्रमुखस्वामीजी महाराज ने संस्था की शैक्षिक प्रवृत्ति के व्यवस्थापकों से कहा कि :

'आप गोंडल गुरुकुल तथा भादरा हाईस्कूल में पढ़ाई करते विद्यार्थीयों के घर जाकर सर्वेक्षण करके आईये कि, कौन-कौन राहतकार्य पर निर्भर है ? जो माता-पिता राहतकार्य से अपना जीवन निर्वाह करते हो, वे बिचारे बच्चों की फिस कहाँ से भर सकेंगे ? इसलिए ऐसे बच्चों की फिस ली हो तो उसे वापस कर दीजिए और अगले वर्ष भी उनकी फिस माफ कर दीजिए। उनके युनिफॉर्म अपनी ओर से करवा दीजिए। पढ़ाई की पुस्तकें तथा कॉपी भी अपनी ओर से दीजिए। अनाज भी चाहिए तो दीजिए। यदि वे

लेने में हिचकिचाये तो उनका सम्मान बना रहे इसप्रकार उनके घर जाकर दे आईये। चाहे जितना भी खर्च हो। हमारा तो भगवान सबकुछ संभालने वाले है।'

10. कांटो का उत्तर गुलाब से

प्रमुखस्वामीजी महाराज के थापे में हुई गांठ के ऑपरेशन के बाद मुंबई में एक हरिभक्त के घर आराम के लिए रुके थे। उस समय एक उच्च पदाधिकारी स्वामीश्री को मिलने आ पहुँचे। पूर्वाग्रह से पीड़ीत वे अधिकारी अति क्रोधावेश में आकर, कड़े शब्दों में स्वामीश्री पर कुछ आक्षेप कर रहे थे। बिमार व्यक्ति का तो हालचाल पूछना चाहिए, ऐसा सामान्य विवेक भी वे भूल गये। परंतु स्वामीश्री ने उनको बोलने दिया। स्वामीश्री ने स्वबचाव के लिए एक शब्द भी नहीं कहा। इतना ही नहीं, साथ में बैठे हुए संत उस व्यक्ति के अविवेक को सुधारने गये तो स्वामीश्री ने उनको भी रोका।

इस घटना को दो वर्ष बीत गये। स्वामीश्री का अपमान करनेवाले वे व्यक्ति कुछ काम प्रसंग पर नैरोबी गये। उनको समाचार मिले कि, प्रमुखस्वामीजी महाराज भी यहाँ बिराजमान है। इसलिए वे स्वामीश्री के पास पहुँचे, तब स्वामीश्री ने सभा में अपने आसन पर से खड़े होकर माला पहनाकर उनका स्वागत किया। और मंच पर अपने साथ ही बिठाये। इंग्लेन्ड और आफ्रिका के सत्संग मंडल के अग्रणी हरिभक्त सभा में आये, तब हर समय खड़े होकर उन अग्रणी को इस व्यक्ति की पहचान करवायी। इतना ही नहीं, वे जिस काम से आफ्रिका आये थे उसमें उन्हे जरुरी सहयोग नहीं मिल रहा था, तो स्वामीश्री ने सभा में घोषणा की और सहकार देने के लिए अनुरोध किया। आश्चर्य की बात तो यह थी कि, वे व्यक्ति उस समय किसी पद पर नहीं थे!

11. मैं इतना भी ना करुं ?!

सन् 1978 में विदेशयात्रा से वापस पधारे तब मुंबई के युवामंडल द्वारा स्वामीश्री का सत्कार समारोह रखा गया था। इस प्रसंग पर एक अच्छा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत होनेवाला था, जिसमें टिकट रखी गई थी। टिकट के पैसो में से कार्यक्रम का खर्च निकालना था।

परंतु कार्यक्रम के समय गडबड़ी ऐसी हो गई कि, टिकटवालो के आने से पहले हरिभक्तों से हॉल भर गया। इसलिए हॉल के बाहर टिकटवाले सदस्यों ने हो-हल्ला मचाया। इसे देखकर हॉल का मेनेजर घबरा गया। उन्होंने आयोजक युवकों को बताया कि, 'आप इसका समाधान करो। वरना हम पुलिस को बुलायेंगे।'

इसलिए युवक परेशान हो गये। अंदर कार्यक्रम देख रहे स्वामीश्री के पास आये और सारी परिस्थिति बतायी।

स्वामीश्री यह सुनकर तुरंत बाहर पधारे और हो-हल्लाकर रहें आगंतुकों को प्रार्थना करते हुए कहा,'मैं आपकी माफी चाहता हूँ। हमारी भूल है, आपके लिए खास दूसरा कार्यक्रम रखेंगे!'

इन शब्दों से ही सब लोग शांत हो गये। और सभी शांति से बिखर गये। परंतु आयोजक युवकों को दुःख हुआ कि, 'हमारी गलती को स्वामीश्री ने अपने सिर ले ली! हमारे कारण उनको अपने सम्मान समारोह में ही मांफी मांगनी पड़ी।'

कार्यक्रम के बाद स्वामीश्री मंदिर पधारे तब युवकों ने उनके समक्ष इस संबंध में दुःख व्यक्त किया। उस समय प्रमुखस्वामीजी महाराज इतना ही बोले कि, 'आप सेवा करते है तो आपके लिए मैं इतना भी ना करुं ?!'

12. उसी हाथ से

कंथारिया (जि.सुरेन्द्रनगर) में मंदिर तैयार होने पर मूर्तिप्रतिष्ठा के लिए योगीजीमहाराज ने अपनी ओर से प्रमुखस्वामीजी महाराज को भेजे थे। प्रतिष्ठा निमित्त आयोजित त्रिदिवसीय पारायण के मुख्य वक्ता भी स्वामीश्री ही थे।

यहाँ एक बार कथा के बाद वे रसोईघर के आगे से निकल रहे थे। उस समय उन्होंने देखा कि, एक संत पुरीयाँ बेल रहे थे। वहीं संत पुरीयाँ तल भी रहे थे। उस संत को दोनो काम एक साथ करने में परेशानी हो रही थी, स्वामीश्री ने देखा तो तुरंत ही एक तेल का खाली डिब्बा उल्टा करके उस पर बैठ गये और स्वयं पूरीयाँ तलने लगे।

जिन हाथो से प्रतिष्ठा होनेवाली थी वही हाथ आज पूरीयाँ तलने लगे। जो कथाकार व्यासपीठ पर बैठकर हाल ही कथारस परोस रहे थे, वही वक्ता फिलहाल डिब्बे पर बैठकर पुरीयाँ तलने लगे।

विराट संस्था के 'प्रमुख' की यह रीत, आध्यात्मिक गुरुपद पर आने के बाद भी बरकरार रही। गुरुपद पर आने के बाद एकबार गोंडल में मंदिर का निरीक्षण करने निकले स्वामीश्री ने भंडारे में देखा कि, 'रोटी के लिए आटा अधिक है और रोटी बेलनेवाले कम है।' ठाकुरजी का थाल और भक्तों का भोजन समय पर हो जाये उसके लिए वे स्वयं एक पाट पर बैठकर रोटी बेलने लग गये। जो हाथ अनेक विराट कार्य के विश्वकर्मा बने थे उसी हाथ से आज रोटी बेल रहे थे।

13. रोने से क्या होगा ?

दि. 31-3-2011 के दिन स्वामीश्री के साथ मीटिंग में बैठे हुए नारायणमुनि स्वामी ने स्वास्थ्य के संबंध में उनसे पूछा : 'बापा!

आपका कंधा अब कैसा है ? क्या अब भी उसमें दर्द हो रहा है ?'

स्वामीश्री ने कहा,'हां, थोड़ा बहुत दर्द है ज्यादा नहीं।'

नारायणमुनि स्वामी ने कहा, 'मतलब दर्द होता है न!'

स्वामीश्री ने कहा,'परंतु रोने से क्या होगा ? सहन करना चाहिए। रोने से दुःख कम नहीं होगा।'

नारायणमुनि स्वामी ने कहा,'परंतु अधिक दर्द हो तो सहन किस प्रकार कर सके ?'

स्वामीश्री ने कहा,'लेकिन ऊ..ऊ... करने से दुःख मिटनेवाला नहीं है। दूसरों को बताते रहे उसमें दुगना दुःख होता है। स्वयं को तो दुःख है ही, परंतु सुननेवाले को भी दुःख होगा। इसलिए शांति से सहन करें। बोल बोल करने से दुःख कम नहीं होता है, परंतु अधिक बढता है। और अभी उम्र हुई, इसलिए ऐसा ही रहनेवाला है ऐसा समझकर सुखी रहें। भगवान की इच्छा समझकर प्रसन्न रहें। अगर हम कुछ करना चाहे तो भी हमसे क्यां हो पायेगा ? भगवान की इच्छा से सबकुछ होता है। ऐसी समझ रखे तो कोई चिंता नहीं रहेगी। हर्ष-शोक की नदि में बहने लगे तो समुद्र में चला जायेगा...'

14. भरोसा

सभी उस पत्र को सुलझाने में लगे हुए थे, परंतु न तो लिखावट पढ़ पाते थे और ना ही लिखनेवाले का नाम और गाँव। स्वामीश्री ने भी उस पत्र सुलझाने में खूब प्रयत्न किया, परंतु कुछ समझ में नहीं आ रहा था। अंत में विचक्षण, स्वामीश्री ने पोस्ट ऑफिस की मुहर पर लिखा हुआ नाम पढ़ा तब पता चला कि, वह पत्र खेड़ब्रह्मा के हींगटिया गाँव से आया है।

इसलिए स्वामीश्री ने उस विस्तार में विचरण करते संत को फोन करवाया, परंतु गाँव में घूमते संत का संपर्क नहीं हो पाया। पांच घंटे

तक प्रयत्न करने पर भी संपर्क नहीं हो सका। अंत में हिंमतनगर मंदिर पर स्वामीश्री का संदेश भिजवाया कि, 'जब संत आये तब तुरंत फोन करवाईये।'

जब संत का फोन आया तब स्वामीश्री ने उनसे कहा,'आपके क्षेत्र के हींगटिया गाँव से पत्र आया है, परंतु उसके संबंध में कुछ पता नहीं चल रहा है तो आप जॉच करके उसे लिखनेवाला कौन है और उसे क्या आवश्यकता है ? हमें बताईये।'

संत ने जॉच की तो पता चला कि, 'उस क्षेत्र में गुन्हाखोरी के लिए नामचीन और एक वर्ष पहले ही स्वामीश्री के डेढ़ मिनट के संबंध में आने से सभी दुषण और कुप्रवृत्तियों से मुक्त हुए आदिवासी, रेशमा पारघी का यह पत्र है। उसने अपने गांव में बिगड़े हुए हेंडपम्प की मरम्मत करवाने के लिए स्वामीश्री को पत्र लिखा था।'

स्वामीश्री ने यह जानकर संतो से कहा,'आप स्वयं जाकर हेंडपम्प की जॉच करें और रिपेर करवाईये। यदि आवश्यकता लगे तो नये पंप की व्यवस्था कर दें।'

एक आदिवासी को स्वामीश्री पर कितना भरोसा है कि, उसने हेंडपम्प के लिए सरकारी अधिकारी को बात करने के बदले स्वामीश्री को बताना आवश्यक समझा!

15. एषा ब्राह्मी स्थिति :

गांधीनगर के अक्षरधाम पर हुए हमले ने प्रत्येक भारतीय के हृदय को हिला दिये थे तब....

संध्या समय शुरु हुई इस हिंसा की होली रात के अंधकार में कैसा रुप-रंग धारण करेगी इसकी चिंता सर्वत्र थी तब...

पूरे जीवन में एक चींटी जैसे जीव को भी दुःख नहीं पहूचानेवाले

ऐसे परोपकारी संत के स्थान को नष्ट करने आये, मोरबी के रेलहोनारत के समय सेंकड़ो मुस्लिम बिरादरो को ईद का मिष्ठान्न खिलाकर उनका मूंह मीठा करनेवाले संत के स्थान नष्ट करनेवाले उन दो आतंकवादीयों के दमन का त्रास कब रुकेगा उसकी चिंता सर्वत्र फैली थी तब...

पूरा देश और दुनिया आक्रोश में थी तब...

सारंगपुर में विराजमान स्वामीश्री को समाचार दिया गया कि,'गांधीनगर के अक्षरधाम पर आतंकवादी हमला हुआ है।'

यह आघातजनक समाचार स्वामीश्री को जब मिले तब वे कच्छ में संस्था द्वारा संचालित भूकंप राहतकार्य की प्रवृत्ति संबंधीत मींटिग में बैठे थे। यह सुनकर वे जल्द से जल्द अक्षरधाम की परिस्थिति शांत हो जाये और कुछ विशेष जानहानी-मालहानी न हो उसके लिए प्रार्थना करने लगे। प्रार्थना के बाद स्वामीश्री ने कार्यवाहक संतों को घटना स्थल पर पहुँच कर आवश्यक कार्यवाही करने का आदेश दिया।

थोड़ी देर में मुख्यमंत्री कार्यालय से फोन आया तब स्वामीश्री ने आतंकवादी के सामने लडनेवाले सबकी सफलता-सुरक्षा के लिए आशीर्वाद दिये।

...और स्वामीश्री ने पुनः मींटिग का दौर चालु रखा उसमें उन्होंने सुरत में संस्था द्वारा निर्माणाधीन अस्पताल, छात्रावास और मंदिर के निर्माण संबंधीत विमर्श किया। उस समय सबको **'स्थितप्रज्ञस्य का भाषा?'** स्थितप्रज्ञ पुरुष कैसे होते है? इस गीता-प्रश्न का उत्तर सबको स्वामीश्री में मिल गया।

16. वह नमक नहीं था परंतु

उस समय प्रमुखस्वामीजी महाराज भोजन के बाद नमक के पानी से गरारे करते थे। रोज के क्रमानुसार एक बार सेवक ने

स्वामीश्री को पानी दिया। उसका गरारे करते समय उन्होने दो बार सेवक से पूछा,'क्या यह नमक है?'

सेवक ने कहा,'हां, आज ही बोतल में नया भरा है।'

सेवक का उत्तर मिलते ही स्वामीश्री ने आगे कुछ नहीं पूछा। पूरे पानी से गरारे कर लिया।

परंतु स्वामीश्री ने दो बार इस प्रकार पूछा इसलिए सेवक को जॉच करने की इच्छा हुई। उन्होंने रसोईघर में जाकर बोतल में से चखकर देखा तो पता चला कि, यह नमक नहीं था, परंतु सायट्रिक एसिड था!

...परंतु इस संबंध में स्वामीश्री कुछ भी नहीं बोले थे। इतना ही नहीं, उस प्रसंग को उन्होंने कभी याद भी नहीं किया।

17. सुबह पता चला कि...

उस दिन शरीर कांप उठे ऐसी तेज ठंड थी। कम था कि, जगदीश को बुखार आ गया था। उसका मित्र राजेन्द्र रजाई खोजने के लिए इधर-उधर घूम रहा था। परंतु रात के 12 बजे का अंधकार, नया आवास और कडाके की ठंड़ में उन्हे रजाई कही मिल नहीं रही थी। बुखार से दु:खी जगदीश की दयनीय स्थिति उसकी परेशानी बढ़ा रही थी।

इतने में तो स्वामीश्री स्वयं एक मंजिल चढ़कर उपर युवको के निवास पर आ पहुँचे। उनके हाथ में एक रजाई थी। उसको देते हुए उन्होंने कहा,'लीजिए! यह उसे ओढा दीजिए।'

'स्वामीश्री हमारी परेशानी कैसे समझ गये?' राजेन्द्र ऐसा सोचे उससे पहले ही स्वामीश्री वहां से निकल गये, परंतु युवकों को सुबह पता चला कि, 'स्वामीश्री स्वयं की रजाई जगदीश को ओढाने के लिए देकर गये थे और स्वयं पूरी रात तेज ठंड़ में केवल उपवस्त्र ओढकर सो गये थे।'

18. यह थी उनकी भावना

कुल 18 लाख लोगों को गरम भोजन...

कुल 4,190 घर सहित 15 दत्तक गाँवों का निर्माण और पुनर्वसन...

कुल 15,000 विद्यार्थीओं के लिए 49 पाठशालाओं का नवनिर्माण...

कुल 91,000 मरीजों की निःशुल्क आरोग्य सेवा...

कुल 409 गाँवों में – शहरों में राहतसामग्री का वितरण और 2,500 लोगों को रोजगार...

कच्छ में ढाई वर्ष के दौरान प्रमुखस्वामीजी महाराज द्वारा किये गये भुकंप राहतकार्य की यह झांकी है...

इस राहतकार्य के दौरान 8,78,299 फूडपेकेट्स का वितरण किया गया। जब फूडपेकेट्स तैयार हो रहे थे तब प्रमुखस्वामीजी महाराज उसकी कार्यवाही देखने पधारे थे। प्रत्येक पेकेट में 150 ग्राम नमकीन और 75 ग्राम मीठी बूंदी रखी गई थी। इसे देखकर स्वामीश्री ने सूचन किया : 'इसमें आचार की दो मिर्ची भी रखें, ताकि उन्हें खाने में अच्छा लगे।'

पीडित का पेट भर जाये इतना ही नहीं, परंतु उन्हे स्वाद भी आना चाहिए। यह उनकी भावना थी।

इस राहतकार्य में 2,48,712 किलोग्राम गेहूँ का आटा भोजन के लिए उपयोग हुआ था। उसकी तैयारी में रुके हुए संत को स्वामीश्री ने सूचना दी थी कि, 'जो अनाज पीसते है उसे बराबर साफ करके पीसे, उसका बराबर ध्यान रखें। कुछ कचरा-कंकड ना आ जाये।'

असरग्रस्तो को स्वाद आये इतना ही नहीं, परंतु उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहना चाहिए – यह थी उनकी भावना।

19. ऐसा हमारा कोई आशय नहीं था।

सन् 1987 में प्रमुखस्वामीजी महाराज 450 संतो-भक्तों के साथ भगवान स्वामिनारायण के प्रासादिक तीर्थस्थानों की यात्रा करने निकले थे। दो महिने पूर्व इस यात्रा का आयोजन किया गया था।

इस संदर्भ में कुछ समय के बाद लंदन के रोमफर्ड विस्तार में रहते एक व्यक्ति का पत्र आया। उन्होंने शिकायत करते हुए लिखा था कि, 'आपको इतनी बड़ी संख्या में यात्रा पर नहीं निकलना चाहिए। उन दिनों में हम भी यात्रा में निकले थे और आपके कारण हमें सब जगह आवास में परेशानी हुई। हमारे परिवार को आपने दुःखी दुःखी कर दिया।'

इसमें भूल किसकी थी? दो महिने पहले आयोजन करके गये हुए स्वामीश्री की या बिना आयोजन किये घूमने निकले हुए उस व्यक्ति की?

फिर भी प्रमुखस्वामीजी महाराज ने उनको प्रत्युत्तर लिखा कि,'आपको परेशानी हुई उसके लिए हमें क्षमा करें। यदि आपने हमें वहाँ पर बात बताई होती तो हम आपकी कुछ मदद कर सकते थे। सुविधा करवा देते। आपको परेशानी हो ऐसा हमारा कोई आशय नहीं था।'

20. प्रत्येक क्षण का उपयोग

एकबार दांत का एक्स-रे निकलवाने के लिए स्वामीश्री अस्पताल पधारे। यहाँ पूर्वतैयारीयाँ हो रही थी इसलिए प्रतीक्षाखंड में बैठकर उन्होंने पत्र का पठन शुरु किया।

समय होते ही डॉक्टर ने बुलायें, परंतु स्वामीश्री पत्र पठन में मग्न थे। इसलिए पत्र को दोनों हाथों में रखकर पढ़ते-पढ़ते ही खड़े हुए। पढ़ते-पढ़ते ही मशीन तक पहुँचे। दांत का एक्स-रे

हुआ तब तक पठन बंद रखा परंतु एक्स-रे होते ही पठन प्रारंभ कर दिया। दूसरे पांच एक्स-रे लेने थे, परंतु उसके बीच में भी वे पत्रों का पठन करते रहे।

प्रत्येक क्षण का उपयोग कर लेने की यह प्रकृति लींबड़ी की नगरपालिका द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में भी देखने मिली। उस समारोह में नगरपति सम्मानपत्र अर्पण करने के लिए स्वामीश्री के समीप पहुँचे तब तक स्वामीश्री पत्र पढ़ रहे थे। सम्मान पत्र का स्वीकार करके तुरंत ही पुनः पत्र पढ़ना प्रारंभ कर दिया।

21. सब जगह सेट (Set)

बोचासण में स्वामीश्री के निवास का आखरी दिन था। सभी संत स्वामीश्री के चारों ओर खड़े होकर अनौपचारिक गोष्ठि कर रहे थे। उसमें एक संत ने मजाक में ही स्वामीश्री से पूछा,'आप इतने दिन यहाँ रहे। यहाँ आपको सेट हो गया हो, तो क्या फिर दूसरी जगह जाने का मन होता है?'

स्वामीश्री ने कहा,'क्यों न हो? हम तो सब जगह सेट हुए ही है! सेट होने की क्या बात कर रहे है? हमें तो जहाँ पर भी जाये, कथावार्ता-भजन ही करना है। कथावार्ता में सेट हुए अर्थात् सब जगह सेट। ऐसा स्थान या ऐसी जगह पसंद आये वो बात ही नहीं है। कथावार्ता-सेवा हो उतना ही सुख है। उसे ही सेट कहते हैं। समझे?'

22. हमेंशा आनंद और आनंद

एकबार प्रसिद्ध साहित्यकार-पत्रकार श्री हरकिशन महेता ने स्वामीश्री से पूछा,'क्या ऐसी कोई घटना है, जिसे याद करते ही आपको दुःख होता हो?'

स्वामीश्री ने कहा,'नहीं, ऐसा कोई प्रसंग ही नहीं है। हमें तो हमेंशा आनंद ही रहा करता है।'

पत्रकार ने पूछा,'क्या ऐसी कोई घटना है कि, किसी पर गुस्सा हुआ हो?'

स्वामीश्री ने कहा,'खास गुस्से का कोई कारण नहीं है। प्रत्येक मनुष्य मात्र भूल के पात्र है।'

पत्रकार ने पूछा,'कभी किसी को डांटने का प्रसंग खडा हुआ है?'

स्वामीश्री ने कहा,'नहीं, यदि किसी को कहना हो तो प्रेमपूर्वक कहते है, जिससे उसको सच्ची प्रेरणा मिलें। उसको दुःख न हो इसप्रकार कहते है। जिससे उसके मन को ठेस न पहुँचे।'

पत्रकार ने पूछा,'यदि कोई आपकी नींदा करे तो?'

स्वामीश्री ने कहा,'उसकी कोई परवा नहीं है। हम भगवान की दृष्टि से सही है फिर लोग चाहे भले कुछ भी बोले। उसे अज्ञान है, कभी समझ में आयेगा।'

पत्रकार ने पूछा,'आलोचना की स्पष्टता करने की कोई आवश्यकता लगती है?'

स्वामीश्री ने कहा,'जरा-सी भी नहीं।'

23. दिल का दौरा पड़ने के दूसरे ही दिन...

दिनांक 4-7-2011 की रात को प्रमुखस्वामीजी महाराज शयनाधिन होने के लिए पलंग पर बैठे तब तक स्वास्थ्य की कोई प्रतिकूलता उनके शरीर में नहीं दिखाई देती थी। शायद उन्होंने पता ही नहीं चलने दिया होगा।

परंतु रोजाना क्रमानुसार सोने के समय उनकी नाडी का परिक्षण किया गया तब डॉक्टर चौक उठे। नाडी की चिंताजनक अनियमितता कुछ भयंकरता दिखा रही थी। परिक्षण करते हुए पता

चला कि, प्रमुखस्वामीजी महाराज को 90 वर्ष की आयु में दुसरी बार दिल का दौरा पड़ा है। तुरंत ही आवश्यक इलाज का प्रारंभ हो गया। निष्णात डॉक्टर आ पहुँचे। सबका मत एक ही था : 'आगामी 72 घंटे निर्णायक है। इसलिए स्वामीश्री को संपूर्णरुप से बिस्तर में सुलाये रखे। यदि थोड़ी भी शारीरिक हलचल हुई तो बहुत बड़ी परेशानी हो सकती है।'

परंतु दूसरे ही दिन प्रातः होते ही स्वामीश्री ने बताया कि, 'मुझे मंदिर में ठाकुरजी के दर्शन करने जाना है।'

सभी डॉक्टरों ने स्पष्ट और दृढ़ असंमति बताई। फिर भी स्वामीश्री दर्शन करने पधारे। तनीक भी व्यग्रता या जल्दबाजी नहीं थी, प्रतिदिन की भांति एकाग्रता से उन्होंने मूर्तियों के दर्शन किये। दूसरे दिन तो तेज बारिश हो रही थी, फिर भी वे इसी प्रकार से दर्शन करने गये। तीसरे दिन भी यही क्रम जारी रहा।

सबको समझ में आया कि, स्वामीश्री के हृदय को चोट आई है, परंतु हृदय में रही हुई भक्ति को नहीं।

24. ऐसी बात न लिखें...

एक आंतराष्ट्रीय बैठक के लिए अमरिका जाने से पूर्व प्रसिद्ध पत्रकार श्री अजय उमट जब स्वामीश्री के पास आशीर्वाद लेने आये तब उन्होंने अपना स्वानुभव बताया कि, 'दिल्ली में अक्षरधाम के उद्घाटन के समय एक राजद्वारी ने बताया कि : 'यदि कोई मुझे कहे कि, मेरे पास भारत में एक ही दिन है, तो मैं उसे कहूँ कि, पहले अक्षरधाम देखिए, यदि दो दिन हो तो फिर दूसरे दिन ताजमहल देखने जाईए।' इस वाक्य के संदर्भ में मैने एक लेख में ऐसा लिखा था कि, ताज को टक्कर दे – ऐसा अक्षरधाम है!'

तब यह पढ़कर आपने मुझे टोकते हुए कहा कि, 'ताजमहल को टक्कर दे ऐसी बात न लिखें। हमने तो सभी मनुष्यों के कल्याण

के लिए किया है। किसी को नीचा दिखाने के लिए नहीं। यह तो हमारी भक्ति है और शास्त्रीजी महाराज और योगीजीमहाराज का संकल्प था, इसलिए किया है। किसी से स्पर्धा करने के लिए नहीं किया है।' आपकी यह भावना मुझे बहुत प्रभावित कर गई।

आज आप सबको मिल रहे थे तब एक मुमुक्षु को व्यसन छुडाने के लिए जिस उत्साह से बात कर रहे थे, उसे देखकर मुझे लगा कि, 'जितना महत्व आपको अक्षरधाम का है उतना ही महत्त्व आपके लिए लोगों को व्यसन मुक्त करवाना है। आप इतनी रुचि लेकर व्यसन छुड़ा सकते है उसकी मैं कल्पना नहीं कर सकता।'

25. आज हम सीखे!

गुजरात के नव नियुक्त छः प्रधान अपनी कार्यवाही के आरंभ से पूर्व स्वामीश्री के आशीर्वाद लेने के लिए आये थे। स्वामीश्री ने उन सभी का सभा में सत्कार करके स्मृति भेंट दी। उनके सचीव, रक्षक और ड्राईवरों को भी प्रसादी दी।

इन सभी प्रधानों का भोजन समारोह भी मंदिर में ही रखा गया था। परंतु पंचायत मंत्रीश्री मोहनसिंह राठवा को जल्दी होने से वे जाने के लिए तैयार हुए। परंतु ड्राईवर नहीं मिल रहा था। जाँच करने पर पता चला कि, सभी मंत्रीयों के साथ स्वामीश्री ने ड्राईवरों और रक्षकों को भी भोजन करवाने बिठाये थे।

तब मंत्रीजी बोल उठे, 'छोटे से छोटे मनुष्य को भी पहले आदर देना ऐसा स्वामीश्री के पास से, आज हम सीखे।'

26. मुझे आपको विशेष मिलना था

दिनांक 3-3-2001 के दिन मोड़ासा में स्वामीश्री के सानिध्य में सार्वजनिक सत्संग सभा रखी गई थी। इस प्रसंग पर साबरकांठा

जिले के छोटे-छोटे गाँवों में रहनेवाले आदिवासी भक्तों भी स्वामीश्री का लाभ लेने हेतु आ गये थे। यह देख स्वामीश्री ने व्यवस्थापक संत से कहा,' आदिवासी भाईयों की अलग सभा हमारे निवास के सामने पूजा स्थल पर करवाईये। वहाँ एक संत को कथा करने के लिए भेज दें। इस सभा के बाद मैं वहाँ आउंगा और ऐसी व्यवस्था करें कि, उसमें उनके सिवा कोई वहाँ सभा में बैठे नहीं।'

इसप्रकार कहकर श्रेष्ठीयों की वह सभा पूरी करके स्वामीश्री आदिवासीयों की सभा में पधारे। वहाँ नीति-नियम विषयक बलप्रेरक आशीर्वाद के बाद उन्होंने कहा कि, 'मुझे आपको विशेष मिलना था इसलिए यह सभा रखी थी। बड़ी (सार्वजनिक) सभा में आपको मिल सके ऐसा नहीं था। यहाँ आपको नजदिक से मिल सके, बात हो सके, क्योंकि मैं आपके गाँव तक आ सकु ऐसा संभव नहीं है, परंतु आप आये है तो सहजरुप से मिल सके ऐसी मेरी भावना थी।'

स्वामीश्री के यह भाव भरे शब्दों से आदिवासीयों की आँखें नम हो गई।

इतने में तो स्वामीश्री बोले,' अब सभी बारी-बारी से दर्शन करने आईये।' इतना कहकर स्थानिय संत से कहा,' सबका परिचय देते जाइए।'

...और एक के बाद एक 200 आदिवासीयों को व्यक्तिगत रुप से मिलकर स्वामीश्री ने उनका परिचय पूछा। सबके सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिये, प्रसाद भी दिया।

27. छोटे रहने में क्या समस्या...

एकबार अहमदाबाद में संतों के साथ गोष्ठि में अपनी जीवन भावना बताते हुए स्वामीश्री ने कहा, 'हमें किसी प्रकार की महत्ता नहीं चाहिए। हम जो कर रहे है उसे सभी देखते ही है। हम जो नहीं

करते है उसे दिखाकर क्या फायदा ? इसकी अपेक्षा बैठे-बैठे माला करें, भजन करें। बेकार दिखावा करने का क्या अर्थ ? हमें अधिक महत्ता नहीं चाहिए और लेना भी नहीं है। योगीजीमहाराज कहते थे कि, 'नाने से हो नाने रहीये।' हमें ऐसा दावा करने की भी जरुरत नहीं है कि, 'प्रमुखस्वामीजी महाराज ही अक्षरधाम कर सकते है, ओर किसी की ताकत नहीं है।' छोटे रहने में क्या समस्या है ? दूसरी संस्थाओं में हम दान करते है, उसकी घोषणा करने की भी आवश्यकता नहीं है। हम तो भगवान का भजन करने आये है, वह सुख लेने जैसा है।'

28. एक-एक पाई का पक्का हिसाब

सुनामी की आपत्ति के असरग्रस्तो के लिए एक सत्संग केन्द्र में कुछ आर्थिक अनुदान आया था। उस सत्संग मंडल के सिमित आर्थिक स्रोत को देखते गाँव के कुछ अग्रणीयों ने सत्संगीयों को सूचना देते हुए कहा कि, 'सुनामी का यह अनुदान आपके मंदिर निर्माण में उपयोग कर दें।'

जब हरिभक्तों ने इस विषय में स्वामीश्री से पूछा। तब स्वामीश्री का उत्तर पारदर्शक था कि, 'सुनामी के आये हुए पैसों का उपयोग संस्था में नहीं कर सकते। जो पैसे जिस निमित्त आये हो उसका उपयोग वही होनी चाहिए। एक-एक पाई का पक्का हिसाब रखना चाहिए। सरकार को भी ऐसा हिसाब हमें देना होता है ! चाहे भले पांच रुपये आये हो, परंतु वे समाजसेवा में ही जाना चाहिए।'

29. चालु गाड़ी में

उस दिन गाड़ी ने नडियाद की सीमा छोडी की तुरंत स्वामीश्री पत्र पढ़ने लगे। एक बड़ा पत्र हाथ में लिया। उसके पृष्ठ अधिक

थे। वे पृष्ठ खोल रहे थे, तब उसमें लगी सेफ्टीपीन नीचे गिर गई। इसलिए स्वामीश्री ने पन्ने बाजु में रखकर और नीचे झुककर धोती में या पैर के नीचे पड़ी हुई सेफ्टीपीन खोजने का प्रयत्न किया।

देखा तो पता चला कि, पीन दो पैर के बीच पड़ी है। उसे उठाने के लिए स्वामीश्री ने एक युक्ति की। पत्र का बड़ा लिफाफा हाथ में लिया और दोनों हाथ से लिफाफे को टेढ़ा पकड़ा और जिस प्रकार कचरा उठाने में एक्स-रे फिल्म का उपयोग किया जाता है उस प्रकार थोड़ा नीचे झुककर सेफ्टीपीन को कागज पर ले ली। उस पीन का फिर से उपयोग हो सके उसके लिए उसको लिफाफे में रख दी।

30. यह ऐसा ही नहीं तो ओर क्या है?

गांधीनगर के अक्षरधाम की मुलाकात के समय, वहाँ निर्माण किये हुए कृत्रिम तालाब के पास स्वामीश्री पधारे तब बागायत विभाग संभाल रहे संत ने स्वामीश्री से कहा,'इस तालाब में बतक को भी तैरते हुए रखनेवाले है।'

स्वामीश्री ने मजाक में पुछा, 'जिंदा या खिलौने की?' उस संत ने कहा,'जिंदा बतक।'

यह सुनते ही स्वामीश्री ने सघन पूछताछ प्रारंभ की। बतक कहाँ से लायेंगे? बतक लाने से पहले उसके आहार का विचार कर लिया है ना? उनको रहने के लिए अच्छे पिंजरे की व्यवस्था की है। उसकी देखभाल का पूरा विचार करके बाद में ही बतक यहाँ लाये, वरना उस बेचारे को परेशानी होगी।

महाभारत के युद्ध की जिम्मेवारी अपने सिर होने पर भी श्रीकृष्ण टिटहरी के अंड़े की देखभाल करना चूके नहीं थे। यह ऐसा ही नहीं तो ओर क्या है?

31. इसमें परेशानी कैसी ?

एकबार एक संत ने स्वामीश्री से पूछा कि, 'बापा! आपको पत्र लेखन में परेशानी होती है या पढ़ने में ?' स्वामीश्री ने कहा,'किसी में नहीं। यह तो ठाकुरजी की भक्ति है इसमें परेशानी कैसी ? जब लिखने का हो तब लिखते है और पढ़ने का हो तब पढ़ते भी है! व्यापारी पूरे दिन कपड़े के ताके निकालता है, फिर भी उसे परेशानी नहीं होती है। इस प्रकार हमें भी नहीं होती है।'

संत ने कहा,'परंतु व्यापारी को तो लाभ होता है, पैसे मिलते है, लाभ दिखता है, इसलिए परेशानी नहीं होती। इसमें आपको क्या लाभ ?, क्या मिलता है ?'

स्वामीश्री ने कहा,'इसमें भगवान की मूर्ति का सुख आता है!'

संत ने कहा,'आप इतना अच्छा काम करते है फिर भी यदि लोग आलोचना करे तो आप परेशान नहीं होते कि, अब करना ही नहीं है ? चलो छोड़ो इसको!'

स्वामीश्री ने कहा,'जिसे भगवान को प्रसन्न करना है, उसे परेशानी नहीं होती। हमने जो काम लिया है, वह हमारे लिए नहीं भगवान के लिए है - यदि ऐसा समझे तो परेशानी नहीं होगी।'

32. इसलिए बोझ लगता नहीं है

एकबार विद्यानगर के छात्रावास में रहते हुए युवा स्वामीश्री के साथ गोष्ठि कर रहे थे। उसमें स्वामीश्री से पूछा कि, 'हम पर जिम्मेदारी आने पर मस्तिष्क में टेन्शन रहता है, जबकि आपको तो कई प्रवृत्तियाँ और जिम्मेदारी होने पर भी आप निश्चिंत दिखते हो, उसका रहस्य क्या है ?'

स्वामीश्री ने कहा कि, 'रहस्य तो इतना ही है कि, हम कुछ करते ही नहीं है, भगवान करते है, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी

महाराज करते है। 'मैं करता हूँ' यदि ऐसा मानें तो टेन्शन बढ़ता है। हम जिम्मेदारी उठाते नहीं है। उनके आदेश का पालन कर रहे है। उनके आदेश का पालन करने से रक्षा भी वे ही करते है। परिणाम अच्छा आये या दूसरी प्रकार का आये, फिर भी सबकुछ भगवान करते है। यह एक ही वस्तु समझ में आ जाये। तो बोझ नहीं लगता। उनकी इच्छा से जो आये उसे स्वीकार लेना चाहिए।'

युवानो ने आगे पूछा कि, 'हमारा सम्मान होता है तब 'वाह! मैं कैसा हूँ?' ऐसा हो जाता है, जबकि आपको सम्मान के समय कैसे विचार आते है?'

स्वामीश्री ने कहा,'हमसे तो भूंजा हुआ पापड़ भी टूट सकता नहीं है। सम्मान तो भगवान का है। उनकी आज्ञा पालन करके उनको प्रसन्न किये है, इसलिए यह सम्मान उनके कारण ही है। लोग हमें उनके मानकर बुलाते है, वरना हमको कौन बुलायेगा? इसलिए भगवान स्वामिनारायण की आज्ञा का पालन कैसे हो? और सबको किस प्रकार प्रसन्न कर सके? ऐसी भावना रखकर सदा सेवक बनकर काम करना है।'

स्वामीश्री ने अपने विचार बता दिये।

33. मेनेजमेन्ट – गीता

घर-परिवार से लेकर देश तक के किसी भी कार्य का सफल संचालन करने हेतु प्रमुखस्वामीजी महाराज ने एक संचालक को निमित्त बनाकर जो कहा था वह मेनेजमेन्ट गीता जैसा है। यह रहे उसके शब्द :

'आप कार्य अच्छा कर रहे है और किया है। आपके विरोधी भी वह जानते है, परंतु स्वभाव के कारण भेदभाव होता रहता है। इसलिए विरोध होता है और एकबार विरोध होने के बाद सही गलत देखते नहीं है। इसलिए हमेंशा सबकी सलाह लेकर आगे

बढ़े। सब जगह सामंजस्थ बनाएँ रखें। सबको अच्छी तरह बुलाएँ, चलाये। यदि इस प्रकार करेंगे तो काम आगे बढेगा। विरोध होने का कारण हमारा स्वभाव और प्रकृति है। हमारे बोलने में ऐसा हो जाता है इसलिए लोगो के अहम् पर चोट लगती है। हमें धीरे रहकर बात करनी चाहिए। हमें शायद काम न करना हो फिर भी सामनेवाले की बात दो बार सुननी चाहिए। इसमें उसको संतोष हो जाता है, क्योंकि जिसके साथ काम ले रहे है, उन सभी के स्वभाव अलग अलग होते है। सभी हमारी रूचि अनुसार चले ऐसी अपेक्षा नहीं रख सकते। इसलिए, हम ही नम्रता रखकर काम करेंगे तो सबका मन जीत सकते है। हम 'बाप की पत्नी' कहे और 'मां' कहे उसमें कितना फर्क है ? इसप्रकार वाणी का विवेक भी सीखें।

यदि कोई शिकायत लेकर आये तो मना करने की अपेक्षा ऐसा कहे कि, 'ठीक है हम देखेंगे, सोचेंगे।' यदि बोलने में संयम आ जाये तो आधा काम हो जायेगा। सबकुछ बोलने से ही बिगड़ता है, इसलिए वाणी को सुधारे। जो लोग विरोध करते है, उन सभी के विरोध को भूलकर आप उनके साथ अच्छा वर्ताव रखेंगे और उनकी सलाह लेंगे तो वही लोग आपका समर्थन करेंगे। इसलिए किसी ने कुछ भी किया हो, परंतु किसी के साथ दुर्भाव न रखें। दुर्भाव रखने से काम होते नहीं है और बोलने में शांति रखें। मीटिंग के समय पचास प्रतिशत दूसरों को बोलने दे, तो दूसरे हमारा सुनेंगे। इसलिए व्यवहार ऐसा करें कि, विवाद न हो। समझौता करके काम करें। किसी की सलाह लेने से हम छोटे नहीं हो जाते है। उपर से हमारी महत्ता बढ़ती है। इसलिए यह बात ध्यान में रखें।'

34. आपको तो पूछना ही पडेगा ना!

योगीजी महाराज के धामगमन के दूसरे दिन प्रमुखस्वामीजी महाराज ने गोंडल मंदिर की खेतीबाड़ी संभावनेवाले संत से

पूछा,‘जहाँ पर आपने गेहूँ बोये है उस स्थल को, वरिष्ठ संतों तथा सभी ट्रस्टी ने मिलकर योगीजीमहाराज के अग्निसंस्कार के लिए पसंद किया है। तो उसमें आपका क्या अभिप्राय है।’

उस संत ने कहा,‘स्वामी! आप संस्था के प्रमुख है। मैं तो आपका सामान्य सेवक हूँ। आपने जो तय किया हो वह ठीक ही है। उसमें मुझसे क्या पूछना?’

स्वामीश्री ने कहा,‘आपने गेहूँ बोये है, मेहनत की है इसलिए आपको तो पूछना ही पडेगा ना!’

उनकी सरलता और नम्रता से उस संत का हृदय प्रभावित हो गया। स्वामीश्री ने उनसे कहा,‘फिलहाल रास्ते की ओर से आधे तक के गेहूँ कटवा दीजिए और टंकी की ओर आधे गेहूँ वैसे ही रहने दीजिए। अगर जरुरत पड़ेगी तो कटवा देंगे।’

फिर पूछा,‘ये गेहूँ का घास हरा है तो क्या वह पशु को खाने में काम लग सकता है?’

उस संत ने कहा,‘दो-तीन दिन तक खा सकते है अधिक दिन के बाद नहीं खा सकते।’

स्वामीश्री ने कहा,‘ज्यों ज्यों गेहूँ कटते जाये त्यों त्यों ट्रेक्टर भरकर, गोंडल की गौशाला और शहर में भी लावारिस या जिनके मालिक है ऐसी सभी गायों को वहाँ गली-गली में थोड़ा बाँट दीजिए। जिससे गेहूँ काम में लग जाये। और गायों को हरा चारा मिल जाये।’

जीवन प्राण गुरुहरि की दुःखद् विदाय के दूसरे दिन स्वामीश्री जिस स्थिरता से छोटे से छोटे निर्णय लेकर कार्य कर रहे थे उसे देखकर वह संत तो चकित ही रह गये।

35. रोज बात होती है

दिनांक 3-10-1980 को बोस्टन में एक बालक ने स्वामीश्री

से पूछा, 'स्वामी! आपने कभी भगवान के साथ बात की है?' स्वामीश्री ने कहा,'हां, रोज बात होती है!'

36. इसप्रकार

एकबार मुंबई में एक युवक ने स्वामीश्री से पूछा,'स्वामी! भगवान आपके साथ किस प्रकार बात करतें है?' स्वामीश्री ने कहा,'जिस प्रकार तूं मेरे साथ बात कर रहा है उसप्रकार!'

37. निष्पाप और हितकारी

दिनांक 27-6-1994 के दिन ओर्लान्डो में तीन अमरिकन नागरिक स्वामीश्री को मिलने आये थे। उनमें से एक ने पूछा,' आपके मन में कभी गलत विचार आया है?' स्वामीश्री ने कहा,' भगवान के विचार आते है। सबका भला हो ऐसे विचार आते है।' फिर से उसने पूछा,'क्या आपने कभी पाप किया है?' स्वामीश्री ने कहा,'पाप करने का कहाँ से रहा? हमें तो जन्म से ही सत्संग है।'

38. कैसे पता चले?

भावनगर में स्वामीश्री पत्र पढ़ रहे थे। उनके बिल्कुल उपर बल्ब जल रहा था। किसी कारण से वह बल्ब होल्डर में से नीचे गिरा और स्वामीश्री की गरदन पर गिरकर नीचे सरक गया। गरम बल्ब शरीर पर गिरने पर भी, मानो कुछ हुआ ही नहीं है, इसप्रकार विचलित हुए बिना स्वामीश्री पत्र पढ़ते ही रहे।

पत्र पठन पूरा होते ही संतो ने इस संबंध में पूछा। तब स्वामीश्री ने सामने से प्रश्न किया,'बल्ब कब गिरा?'

यह सुनकर किसी ने कहा,'आपकी स्थितप्रज्ञता को मानना पड़े!!'

स्वामीश्री ने कहा,'जब भगवान में अखंडवृत्ति हो फिर कैसे पता चले?'

39. आप उदास मत होना

'हमारी क्या भूल हुई होगी, हमें समझ में नहीं आती है? मेरा लड़का दिन-प्रतिदिन बदलता जा रहा है। वह उसकी मां को मारता है, मेरे सामने भी कुछ भी बोलता है। हर बात पर गुस्सा करता है। और छोटी-छोटी बातों में रुठ जाता है। उसको सुधारने में, लाड करने में, उसकी इच्छा पूरी करने में कुछ भी बाकी नहीं रखा। फिर भी जब ऐसा होता है, तब जिन्दगी से नफरत हो जाती है।'

पिता-पुत्र के सम्बन्धों की इस आग से जल रहे एक पिता के इस आक्रंद से वातावरण कांप उठा। तब उसको शांति देते हुए स्वामीश्री ने पूछा,'आप अपनी कोई फर्ज निभाना भूल गये है?' उसने कहा,'नहीं स्वामीश्री!'

स्वामी ने कहा,'आपने उसे कभी दुःखी किया है?'

वह कहे,'नहीं। सिवाय जब अपनी मां को मारता है तब मैने उसको टोका होगा।' स्वामीश्री ने कहा,'देखो, आपने आपका संपूर्ण फर्ज निभाया है। किसी प्रकार उसे दुःखी नहीं किया है। फिर भी वह मारे, अपमान करे, ऐसा-वैसा वर्ताव करें, उसमें आपका क्या दोष? यह तो कर्म संबंध है। वह पूर्वजन्म का लेके आया है। जब पूरा होगा तब एकदम से सब शांत हो जाएगा, ऐसा भी हो सकता है। इसमें आप अपराधी नहीं है। इसलिए आप उदास मत होइयेगा कि, मेरी भूल से ऐसा हुआ है! प्रार्थना करें, भगवान आपके पक्ष में है। इसलिए शांति रखें। लोग बोले उसे मत सुने। सबकुछ अच्छा हो जायेगा।' स्वामीश्री के इतने शब्दों से उस पिता के जीवन में आक्रंद की जगह आनंद हो गया।

40. एक ही मिनट में समाधान!

'हमारा समाधान कराईये! दो भाईयों के बीच संपत्ति बंटवारे के विषय में समस्या हुई है।' ऐसा कहते हुए स्वामीश्री समक्ष एक परिवार द्वारा यह बात रखी गई। तब स्वामीश्री भी भरपुर आत्मविश्वास के साथ बोले,'एक ही मिनट में समाधान हो जायेगा।'

यह सुनकर आनेवाले तो खुश हो गये। उन्होंने कहा,'वाह! तब तो बहुत अच्छा।'

तब स्वामीश्री ने बताया कि, 'यदि आप मनमानी छोड़ दो, तो एक मिनट में समाधान! परंतु कोई अपनी मनमानी छोड़ते नहीं है। जैसा कहे ऐसा कर देना चाहिए। तुरंत ही मनमानी छोड़ देनी चाहिए। आपके पिता इतनी सारी कमायी करके गये, परंतु क्या कुछ साथ ले गये? तो फिर क्या आप ले जानेवाले है? आप कोई भूखे नहीं है, बहुत कुछ कमाये है। तो फिर ऐसा कह देना चाहिए कि, 'भाई! तूं ले जा।' परंतु ऐसा होता नहीं है, इसलिए यह बात यहाँ अटक गई है।'

41. प्रत्येक पिता और पति के लिए

अमरिका के युटाह राज्य के उद्योगपति श्री डेनियल कुक ने स्वामीश्री से पूछा,'मैं आदर्श पिता और आदर्श पति किस प्रकार बन सकु?'

तब स्वामीश्री ने कहा,'नियम पालन करना चाहिए और घर में एकता रहे, पत्नी और आपके बीच प्रेम रहे उसके लिए सरलता सीखनी चाहिए। संतानों और पत्नी के लिए समय निकालीए। रोज पत्नी और बच्चों के साथ बैठकर घरसभा करें। यदि टी.वी. बहुत देखते हो तो थोड़ा कम करके परिवार के साथ मिलें-झूलें और अच्छे ग्रंथो का पठन करें।'

42. इतना तो समझे...

एक हरिभक्त अपने पुत्र के पुनःलग्न का प्रस्ताव लेकर स्वामीश्री के पास आये। उस समय स्वामीश्री ने पुत्रवधु के साथ वर्तन कैसा रखें ? उसकी अद्‌भुत बात बताते हुए उनसे कहा कि,' आप लडकी ब्याह कर लाईये उसकी कोई समस्या नहीं, परंतु इतना तो समझें कि, नई आयी हुई लड़की को किस प्रकार सेट करें ? आपकी पत्नि, आपकी दो लड़कीयाँ इन सभी के स्वभाव होते है। और जब नई लड़की आये तब उसे अपनी लडकी मानकर एकता से काम लेना चाहिए। यदि उसको कुछ आता ना हो तो सिखाना चाहिए। आप अपने पुराने स्वभाव के अनुसार चलें और जो नई लडकी आयी है, वह नये जमाने की होती है, तो फिर कहाँ से मेल बैठेगा ? इसलिए पहले स्वभाव मेच करने की जरुरत है। थोड़ा लेट गो करना पड़ता है। आप उसे प्रेम से कहेंगे, तो उसे भी उत्साह रहेगा। और यदि कुछ प्रेम-भाव दिखायेंगे ही नहीं तो फिर उसे आपके सामने खड़े रहने का मन कैसे होगा ? उसको सांत्वना, धीरज देना चाहिए। फिर जब समय बित जाता हैं, तब एक-दूसरों के साथ सब सेट होता है।'

43. मेरें इतने वचन मान लें...

'मुझे एक लड़की के साथ प्रेम है, परंतु उसके माता-पिता के दबाव के कारण उसकी शादी दूसरी जगह हो चूकी है। मैं उस लड़की को दूसरी जगह जाते देख नहीं पाऊँगा। मुझे उसके साथ ही शादी करनी है। यदि ऐसा नहीं हुआ तो मैं आत्महत्या कर लूंगा। मैं उसके रास्ते में नहीं आउंगा, परंतु मर जाउंगा। उसके लिए एक नहीं, परंतु सौ जन्म लेने के लिए तैयार हूँ। आप आशीर्वाद दीजिए। मेरे पर इतनी दया करीएँ।'

युवानी के सहज आवेग का शिकार बना हुआ वह युवान इसप्रकार स्वामीश्री के आगे अपनी बात बताते हुए खड़ा रह गया। उसकी नासमझी देखकर स्वामीश्री दो घड़ी मौन रह गये। फिर धीरे से बात करते हुए कहा,'भगवान की इच्छा से ऐसा हुआ होगा - ऐसा समझकर आगे बढ़ने में ही तेरी भलाई है।'

परंतु यह बात उसकी समझशक्ति से परे थी। फिर उसने कहा,'मुझे नकारात्मक विचार बहुत आते है!'

स्वामीश्री ने कहा,'कुछ दिन ऐसा होगा, क्योंकि अभी वेग है, परंतु बाद में मन में से निकल जायेगा। उसको भूल ही जाना। उसमें शांति है। जो भी कुछ हुआ है वह तेरे भले के लिए ही है। भविष्य में आप दोनों को परेशानी होनेवाली हो उसकी अपेक्षा भगवान ने अभी से ही नामंजुर कर दिया। इसलिए शांति से स्वामिनारायण, स्वामिनारायण भजन करें। यह तेरी भलाई की बात है। आत्महत्या करने का विचार ना करें। मेरें इतने वचन मान लें और जीव में ऐसी दृढ़ता कर कि, भगवान ने जो किया है वह अच्छे के लिए ही है। प्रार्थना करते रहना, जो हो गया उसे भूल जाना।'

स्वामीश्री ने प्रत्येक घायल युवा हृदय के लिए यह बात बतायी है।

44. दो में से एक वहाँ से निकल जाये।

विदेश से एक महिला ने पत्र में लिखा था कि, '...मेरे पति फिलहाल कई समय से मंदिर आते नहीं है और हरिभक्तों का अभाव लेते है। मैं स्वयं भी कार्यकर्ता के रुप में सेवा तो देती हूँ, परंतु मैं भी अभाव लेती हूँ। घर में भी बहुत लड़ाई होती है। एक दूसरों के दोष निकालकर लड़ाई करते है। आपने ही मेरे पति को माला पहनायी है, परंतु अब आप दया करें। अपने ही संतानों के साथ मैं गुस्से के कारण पशु की तरह वर्ताव करती हूँ। मुझे और

मेरे पति को जब गुस्सा आता है तब वाणी-विवेक चूक जाते है। इसलिए गुस्सा ना आये ऐसा कीजिए।'

पत्र की यह जानकारी पढ़ स्वामीश्री मन में हंसने लगे और बोले, 'यदि स्वभाव मिटेगा तो ही शांति होगी।' फिर उत्तर में लिखवाया कि, 'जब गुस्सा आ जाये तब 'स्वामिनारायण, स्वामिनारायण' भजन करना और दो में से एक वहाँ से निकल जाना।'

45. लक्ष्मीजी पधारें...

'तूं मर जा!' दो लड़की के बाद, गर्भ में रहा हुआ तीसरा संतान भी लड़की ही है। इसका पता चलने पर एक पति ने, अपनी पत्नी के समक्ष इस प्रकार गुस्से में बोला। बार-बार इसप्रकार सुनने से परेशान उस महिला ने स्वामीश्री को पत्र लिखकर बताया कि,'यदि मुझे जीवित रखना हो तो पुत्र दीजिए और यदि पुत्र नहीं देना हो तो मुझे धाम में ले जाईए।'

पुत्र की इच्छा से ही एक अन्य महिला ने भी स्वामीश्री को पत्र में लिखा था कि, 'आपने मेरे पति को आशीर्वाद दिये थे, 'तेरी पीढ़ी और तेरे आगे की पीढ़ी और तेरे पीछे की पीढ़ी का भी कल्याण करुंगा।' आपके आशीर्वाद में विश्वास रखकर एक बेटी के बाद फिर से दूसरे बालक के लिए सोचा। मैने भी पूजा शुरु कर ली। सत्संग परीक्षा देने की भी तैयारी की। प्याज-लहसून भी बंद किये। अक्षरदेरी की मन्नत भी रखी, परंतु भगवान ने धोखा किया और 'फिर से लड़की आयी।' जो लोग पाप करते है उनके वहाँ पुत्र आता है और मैने विश्वास रखा तो उसका यह परिणाम ? मुझे दु:ख हुआ है इसलिए मैने पूजा बंद कर दी है।'

स्वामीश्री ने उन दोनों महिलाओं को उत्तर लिखवाते हुए बताया कि,'भगवान सर्वकर्ता है। इसलिए जो आये उसका स्वीकार कर लेना चाहिए। उससे सुखी होंगे। लडकी हुई वह भी अपनी

पीढ़ी है ना! इसलिए जो हुआ वह अच्छे के लिए होगा! भगवान स्वामिनारायण की आज्ञा में रहे और अन्य कोई विचार ना करें।'

एक पुत्र की इच्छावाले पिता ने भी पुत्र के बदले पुत्री का जन्म हुआ इसलिए उसे बहुत बुरा लग गया था। वह स्वामीश्री की गोद में सिर रखकर रोने लगे तब स्वामीश्री ने कहा था, 'यह तो लक्ष्मीजी की पधरावनी हुई है। उसमें हमें प्रसन्न होना चाहिए।'

46. प्रेम से और समझाने से

मेरा और मेरी पत्नी का, बच्चों के पालन करने का दृष्टिकोण अलग है। यदि बालक शैतानी करे तो मैं उसे प्रेम से समझाने का प्रयत्न करता हूँ, परंतु उसकी माता बालक थोड़ी सी भूल करे तो उसे मारती है और बहुत डांटती है। इसके कारण हमारे दोनों के बीच में मतभेद होता है। क्या करें कुछ समझ नहीं आता है?

संतति पालन के विषय परेशान होते हुए पिता ने स्वामीश्री के समक्ष अपना दु:ख व्यक्त किया तब....

स्वामीश्री ने बालविकास का मार्गदर्शन देते कहा कि,'बालक नासमझ है। उससे प्रेम से बात करें और शांति से समझाईये। यदि प्रेम से काम लेंगे तो ही वह आगे बढ़ेगा। मारने से वह आगे नहीं बढ़ सकता। इसलिए प्रेम से और समझपूर्वक ही व्यवहार करना चाहिए।'

47. तो दोनों का संसार सुखी रहें

स्वामीश्री समक्ष 'अक्षरामृत' पुस्तक का पठन हो रहा था। उसमें बात आई, 'स्वयं की स्त्री (पत्नी) के साथ भी विवाद ना करें।'

स्वामीश्री ने यह फिर से पठन करवाया और कहा,'घर में पत्नी के साथ अधिक बहस ना करें, हाथ जोड़े, सोरी कहकर आगे बढ़ें।

धीरज से, शांति से काम लें।'

इतना बोलकर फिर हंसते हुए कहे,'यह बात पत्नी को भी समझनी है, वह भी गलत वाद-विवाद में ना उतरे और सरलता रखें। तो दोनों का संसार सुखी रहेगा।'

48. आपने इतना ही कहा था

दिनांक 19-6-2006 के दिन अमदाबाद के एक श्रेष्ठीजन स्वामीश्री का आभार व्यक्त करने आये थे। वे अपने जीवन को सुंदर बनानेवाले स्वामीश्री के चरणों में कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहने लगे,

'करीब पांच-सात वर्ष पहले मैं जब आपके दर्शन करने आया तब हमारा परिवार छिन्न-भिन्न था। भाई-भाई के बीच बोलने का व्यवहार नहीं था। मैने आपको यह बात बताई तब आपने इतना ही कहा था कि,'यदि आपके भाई आपके घर ना आये, आपको सहकार ना दे अथवा आपके साथ झगड़ा करें, परंतु आप उनको बुलाये और उनके घर भी जाये। उनका प्रसंग संभाल लें।'

आपके आदेश अनुसार मैने ऐसा किया। एक भाई अस्पताल में थे तब जाकर मैने उनकी सेवा की। इसके कारण उस भाई में परिवर्तन आया। आज सभी भाई मेरे घर आने लग गये है। इतना ही नहीं, मैने जो यह किया उससे मेरे अंतर में शांति और आनंद है।'

यह सुनकर स्वामीश्री बोले, 'हम नम्र हो जाये उसमें शांति रहेगी। हमें कहाँ कुछ ले जाना है ? या देना है ?'

49. तो ही आगे बढ़ सकते है

एक युवान मानो सभी युवकों की ओर से प्रश्न पूछ रहा हो इस प्रकार स्वामीश्री को पूछा,'युवानी में जीवन को सफल बनाने के

लिए क्या करना चाहिए?'

तब स्वामीश्री ने सफल युवानी का मंत्र बताते हुए कहा,'सबसे पहले भगवान में श्रद्धा चाहिए, दूसरा सद्ग्रंथो का पठन और भगवान के दिये हुए नियम-धर्म का पालन, व्यसन-दूषण से दूर रहना चाहिए, व्यभिचार नहीं करना चाहिए, तो भगवान प्रसन्न होते है, और भगवान प्रसन्न होते है, उससे सफलता मिलती है। अच्छे मनुष्य का संग करें। व्यवहार में या सत्संग में या नौकरी में अच्छे की संगत रखे तो ही आगे बढ़ सकते है।'

50. भगवान ऐसा क्यों करते है?

'मैं मूल लेबनान देश का हूँ। सन् 1975 में वहाँ युद्ध हुआ था। उस समय मेरे माता और भाई मारे गये। इस घटना को जब याद करता हूँ तब मुझे बहुत दुःख होता है। मेरा हृदय हमेंशा भारी रहा करता है। मुझे यह एक ही प्रश्न सताता है कि, 'भगवान ऐसा क्यों करते है?''

ह्युस्टन के सुप्रसिद्ध इन्जिनीयर और आर्किटेक मन्जुर हुरानी ऐसा कहते हुए उदास हो गये थे। उनके हताश हृदय में से बार-बार यही प्रश्न उठता था कि, 'भगवान ऐसा क्यों करते है?'

उन्होंने जब स्वामीश्री को यह बात बताई तब स्वामीश्री ने उनका हृदय शांत करते हुए सुंदर हितोपदेश दिया कि, 'भगवान को कोई पक्षपात नहीं है। उनको तो सबका भला ही करना है, परंतु मनुष्य के स्वभाव, प्रकृति और अहंकार के कारण सब दुःख दर्द होते है। दुःख तो आता है और जाता है, परंतु इतना समझना है कि, भगवान जो करते है वह भले के लिए ही है। मृत्यु किस प्रकार होने वाली है उसका पता नहीं, परंतु होती है यह निश्चित बात है। हमें स्नेह होता है इसलिए हृदय भारी रहे यह स्वभाविक है, परंतु इस में दुःख को मिटाने के लिए ज्ञान की आवश्यकता है। और जितना अच्छा कार्य

करोगे, उतनी अंतर में शांति रहेगी। आप अच्छे कार्य करते रहो तो भगवान प्रसन्न होगे और उसके कारण अंतर में शांति रहेगी।'

51. गृहस्थगीता

'गृहस्थगीता' की उपमा दे सके ऐसी एक बात करते हुए स्वामीश्री ने सुरत के दो भाईयों को हितोपदेश देते हुए कहा था कि,

'आप सभी मेहनत करके आगे आये हैं। अब संपत्ति के बारे में लड़ाई है तो थोड़ा उदार मन रखकर, आपस में बैठकर, एक दूसरों के विचार सुनकर समस्या मिटाने का प्रयत्न करें। कारण यह कि, दूसरों से कहने जायेंगे तो उन सभी को तो मेल-मिलाप की अपेक्षा लड़ाई करने में अधिक रुचि होती है। यदि कोर्ट-कचहरी करे तो उसमें बेकार खर्च होता है और आपस में मन मुटाव खड़ा होता है और बाद में हमारे लड़को में भी यही भावना बढ़ती रहेगी। इसलिए ऐसा ना हो उसका ध्यान रखें। पैसे महत्त्व के नहीं है, परंतु एक दूसरों में प्रेम रहे यह महत्त्व का है। कुटुम्ब भावना रहे यह महत्त्व का है।

इसलिए सम्पत्ति का बटवारा करते समय यह विचार करें। कोई किसी का नसीब नहीं ले जानेवाला। यदि नसीब में होगा तो आनेवाला ही है। इसलिए पैसे को महत्त्व दिये बिना कुटुम्ब भावना को महत्त्व दें। यदि नसीब होगा तो लड़के भी कमायेंगे। इसलिए उसकी चिंता भगवान पर छोड़ देनी चाहिए।'

52. नो (NO) तर्क, नो (NO) संशय

सबके लिए कष्टदायक ऐसी सार्वजनिक समस्या से यह मुमुक्षु भी बाकी नहीं रहे। उसमें से छुटकारा पाने के लिए ही उसने स्वामीश्री से पूछा,'टेन्शन ना हो उसका कोई उपाय है ?'

स्वामीश्री ने कहा,'हां, गुरु कहे वैसा करे यह फोर्म्युला है। उसमें नो (NO) तर्क, नो (NO) संशय।'

53. इस प्रकार घोषणा करें।

'आज के जमाने में आपके जैसे संतो के आँखों से दर्शन करने से, नेत्र को प्रभु मिले ऐसा आनंद होता है। आपसे नम्र प्रार्थना है कि, गुरुपूर्णिमा के दिन प्रत्येक हरिभक्तों को आप ऐसा आदेश दीजिए कि सभी वृक्षारोपण करें। आपके बिना इस पृथ्वी को कोई नंदनवन नहीं बना सकते। मेरी आपसे यह नम्र प्रार्थना है।' स्वामीश्री पर इस प्रकार की बिना नाम की चिट्ठी आई थी।

जिन स्वामीश्री की प्रेरणा से लाखों वृक्ष बोये गये है, उनको वृक्षारोपण के विषय में अनुरोध था। फिर भी स्वामीश्री ने उसको मन में लेकर, गुरुपूर्णिमा के दिन अपने आशीर्वाद की समाप्ति के बाद व्यवस्थापक को सूचना देते हुए कहा,'सभी हरिभक्त अपने गाँव में या खेत में जहाँ अनुकूल हो वहाँ एक वृक्ष बोने का नियम लें। जिससे पर्यावरण को लाभ होगा। इस प्रकार घोषणा करें।'

यह घोषणा स्वामीश्री की सरलता, अहंशून्यता और लोकहित के लिए कुछ करने की करुणा के त्रिवेणी संगम से प्रकट होकर जन-जन के हृदय तक पहुँच गई।

54. ऐसा नहीं होना चाहिए।

अटलादरा में स्वामीश्री के सांनिध्य में जन्माष्टमी के उत्सव का आयोजन हुआ था। उत्सव सभा का समय रात्रि 8:30 से 10:30 बजे का था। स्वामीश्री ने इस संबंध में पूछताछ की, तब संतो ने कहा,'आपको इसमें कोई बदलाव करना हो तो बताईये। आप कहे वैसा करेंगे।'

तब स्वामीश्री ने कहा,'मैं नहीं, सबका क्या कहना है ? 'मैं कहूँ ऐसा ही होना चाहिए।' सर्वमतानुसार होना चाहिए।'

संवादिता का संगीन सुझाव स्वामीश्री के शब्दों में से निकल पड़ा।

55. क्या विशेष है ?

उस सत्संगी युवक को किसी परप्रांतीय युवती से प्रेम हो गया था। इस संबंध में माता-पिता की संमति नहीं थी फिर भी उसके आग्रह से उन्होंने शादी करने की संमति दी थी। कुछ समय में शादी होनेवाली थी। सत्संगी युवक ने प्याज-लहसून बिना की रसोई से लेकर कई बातों पर युवती को संमत कर दिया था। परंतु एक बात पर समस्या खड़ी थी। युवती की इच्छा ऐसी थी कि, 'शादी के दिन मुझे सबको अंडेवाले बिस्कीट खिलाने है।'

इस समस्या को सुलझाने के लिए वह युवान स्वामीश्री के पास पहुँचा और कहने लगा,'मुझे ऐसा लगता है कि, यदि उसे धीरे-धीरे सत्संग में लाना हो तो इतना समझौता करना चाहिए, तो उसे दुःख नहीं होगा।'

युवान के तर्क में छिपी हुई पराधीनता किसी से अनजान ना रहे ऐसी थी। इसलिए स्वामीश्री ने उससे कहा,'हम मांसाहार नहीं करवा सकते। उस लड़की ने प्याज-लहसून से लेकर सबकुछ छोड़ दिया तो उसे इसे छोड़ने में क्या प्रश्न है ?'

'मेरे मन में लगता है कि, उसको सभी बातों में 'ना' कहते है तो इस बात में उसकी इच्छा पूरी करें, तो आगे चलकर उसे सत्संगी बनाने में कोई समस्या नहीं होगी।' युवान अपनी बात समझाने का प्रयत्न कर रहा था।

परंतु स्वामीश्री ने उसकी वास्तविकता बताते कहा,'तूझे शादी करने की गरज है तो क्या उसे नहीं है ? तूने इस लड़की से शादी

करने के लिए अपने माता-पिता की इच्छा छोड़ दी और उस लड़की की इच्छा अनुसार किया तो क्या वह तेरी इच्छा अनुसार इतना नहीं करेगी। उसे समझा कि, अंडा खिलाने से क्यां कोई महत्ता बढ़नेवाली है ? और यदि ना खिलाये तो शादी तूट जानेवाली है ? सब प्रकार से धूमधाम होगी। हम प्रार्थना करेंगे। उसकी बुद्धि में भगवान प्रवेश करेंगे। खाना विशेष है या नियम-धर्म पालन करना विशेष है ? नियम-धर्म पालन से भगवान प्रसन्न होंगे। खाने से क्या होनेवाला है ?'

वह कमजोर युवान मजबूत बनकर वहाँ से विदाय हुआ।

56. रीत जगत से न्यारी...

दिनांक 8-4-1984 के दिन एन्टवर्प में एक मुमुक्षु ने स्वामीश्री से पूछा कि, 'हमें स्वभाव का घर्षण होने से सामनेवाली व्यक्ति में वही दिखाई देता है। आप तो प्रत्येक के स्वभाव जानते है फिर भी आप कौन-सी दृष्टि रखते है ?'

स्वामीश्री ने कहा,' भगवान और संत किसी के अपराध के सामने नहीं देखते। जानने के बावजूद भी नहीं देखना और देखने पर भी अनदेखा कर देना, सुनने पर भी अनसुना कर देना। सामनेवाली व्यक्ति में 99 अवगुण हो, परंतु एक तो गुण होगा न ?'

57. प्रयत्न कभी ना करें।

संस्था के एक कार्यविभाग संबंधीत विमर्श करते करते स्वामीश्री भोजन करने के लिए पधार रहे थे। अपने कार्यविभाग का रिपॉर्ट देते हुए उस संचालक ने कहा, 'मैं तो हमारे व्यवस्थापकों को विशेष यह सूचना देता हूँ कि, जैसा हो उससे अधिक बढ़ाकर कभी ना कहे।'

स्वामीश्री तुरंत ही इस बात को समर्थन देते हुए बोले, 'बिलकुल ठीक है। सरकार या समाज को छलने का प्रयत्न कभी ना करें। जितना हम करते है यदि उससे कम कहे तो चिंता नहीं, परंतु गलत संख्या देने की कोई जरुरत नहीं है।'

स्वामीश्री कम करके अधिक दिखानेवाले नहीं, परंतु अधिक करके थोड़ा दिखाने की भावनावाले थे।

58. टैकनोलजी

'बापा! देखो, यह हमारी टैकनोलजी है। इस पारदर्शक केप्स्यूल में दो सूक्ष्म कैमरा आते है। इस केप्स्यूल को दर्दी निगल जाये बाद में अंदर रहा हुआ कैमरा फोटो ले लेते है। भीतर के अवयव के फोटो लेकर उसकी इमेज बाहर के रिसीवर में भेजता है। उससे आंत से लेकर शरीर के सभी अंगों की स्थिति का ख्याल आ जाता है। यह हमारी टैकनोलजी आपको बताई। अब आपकी टैकनोलजी हमें बताईये।'

शिकागो के एक डॉक्टर ने जब स्वामीश्री के समक्ष इसप्रकार बताया तब स्वामीश्री ने बताया कि, 'अक्षररुप होकर पुरुषोत्तम की भक्ति करें यह हमारी टैकनोलजी है। हम आत्मा है, हम अक्षर है, ब्रह्म है यह ज्ञान दृढ़ करें। हमारे कोई सगे-स्नेही नहीं, माता-पिता भी नहीं। यदि ऐसा समझ में आ जाये तो माया के भाव से मुक्त हो जायेंगे।'

59. वे देखते ही है

ल्यूटन के एक सत्संगी ने स्वामीश्री से पूछा कि, 'मेरी दुकान में एक हरिभक्त नौकरी करते है। वह पक्की निष्ठावाले है। परंतु उनको पैर में बहुत परेशानी है। वह खड़े भी नहीं रह पाते। हर

दो-तीन दिन में इलाज करवाने के लिए अस्पताल जाना पड़ता है। भगवान अपने भक्त को ऐसा दुःख क्यों देते होंगे?' एक सत्संगी की अनुकंपा इस प्रकार दिखाई दी।

तब स्वामीश्री ने उसको बताया कि, 'भक्त तो पक्के होते है, फिर भी कईबार वे अपने प्रारब्ध लेकर आये होते है। उस प्रारब्ध का भूगतान उसे भगवान एक साथ करा देते है। इसलिए फिर से उसे इस दुनिया में आना ही ना पड़े। अक्षरधाम में पहुँच जाये।'

उस हरिभक्त ने कहा,'परंतु ऐसे भक्त को क्या इसप्रकार ही ले जाते है? उसका दूसरा कोई उपाय नहीं है?'

स्वामीश्री ने कहा,'कसर तो मिटानी ही पड़ेगी ना! भगवान ऐसा दुःख देकर जगत में, माया में, देह में आसक्ति हो तो, उससे छुड़ाते है। फिर उसको ऐसा हो जाये कि, 'हे भगवान! अब मुझे छुड़ाओ' इसलिए जो दुःख देते है वह भी मेरे भले के लिए ही होता है। हमारे भीतर जो कुछ कसर रह गई हो वह निकल जाये, हम शुद्ध हो जाये, इसलिए भगवान के सिवा कही भी हमारी वृत्ति ना रहे। बाद में हम व्यवहार करेंगे फिर भी हमारी वृत्ति भगवान में रहा करेगी।'

उस हरिभक्त ने कहा,'आपकी बात ठीक है। परंतु ऐसे भक्त हो तो उसके सामने तो भगवान को देखना चाहिए ना?'

स्वामीश्री ने कहा,'वे देखते ही है कि, इस बार उसे अक्षरधाम में ले जाना ही है। प्योर (शुद्ध) हो तो ही ले जाये ना!'

स्वामीश्री की यह रीत है - सत्संगी की सुयोग्य संभावना भी करना, इसके साथ साथ समझ भी दृढ़ करवाते है।

60. हंमेशा और कभी नहीं

एकबार स्वामीश्री को संतो ने पूछा,'आपको कौन सा विचार अखंड रहता है?'

स्वामीश्री ने कहा,‘भगवान का।’ फिर बोले,‘मुझे कौन-सा विचार कभी नहीं आता है उसे कहूँ। किसी का अहित हो ऐसा विचार मुझे कभी नहीं आया है। हमेंशा हित के ही विचार आते है।’

61. मैं चलाता ही नहीं...

एकबार मंगलभाई नामक सद्‌गृहस्थ ने स्वामीश्री से पूछा कि, ‘इतने सारे 500 से अधिक मंदिर (सन् 2003 के वर्ष तक के संदर्भ में) और इतना सारा पूरे देश-विदेश में सत्संग! तो आप यह सब शांति से किस प्रकार चला सकते है?’

यह सुनते ही स्वामीश्री हंसने लगे और हाथ जोड़कर कहा,‘मैं चलाता ही नहीं हूँ। गुरु और भगवान, ये दो ही सबकुछ चलातें हैं। जब हम ऐसा माने कि, ‘हम करते है।’ तो कोई कार्य होंगे और कोई कार्य नहीं होंगे तो हम निराश हो जाते है। हमें अपनी ओर से संपूर्ण परिश्रम करना चाहिए। फिर उसका फल भगवान को जो देना हो उसे उन पर छोड़ देना चाहिए। और शायद सफलता ना मिले फिर भी हमारे हित में है, ऐसा हमें दृढ़ मानना चाहिए।

हमारे गुरुजी ने हमें सिखाया है कि, पानी का घड़ा भरकर अपने सिर पर रखे तो उसका बोझ हमें सतत लगता है, परंतु पानी में ही गोता लगा दें तो हजारों टन पानी सिर पर से निकल जाये फिर भी उसका बोझ नहीं लगता। इसलिए, हम कुछ करते ही नहीं। भगवान और गुरु ये दोनों ही सबकुछ करते है। यदि अहंममत्व से करेंगे तो दुःख का पार नहीं। इसलिए भगवान और गुरु सबकुछ करते है, ऐसा हम हमेंशा मानते है। इसप्रकार पूरी संस्था का संचालन होता है।’

62. भगवान अखंड साथ में ही है।

सितम्बर, 1998 में एडिसन में प्रसिद्ध वर्तमानपत्र 'फिलाडेल्फिया ईन्क्वायरर' के तंत्री और पुलित्झर पुरस्कार विजेता श्री रोनाल्ड पटेल स्वामीश्री का इन्टरव्यू ले रहे थे। हृदय की बायपास सर्जरी के बाद का स्वामीश्री के अनुभव को जानने के लिए वे प्रयास कर रहे थे।

रोनाल्ड ने पूछा,'आप जब बायपास सर्जरी के बाद होश में आये और आपको पता चला कि आप पृथ्वी पर ही है तब आपको सबसे पहला विचार कौन-सा आया था?'

तनीक भी विलंब किये बिना स्वामीश्री ने कहा,'भगवान का।'

रोनाल्ड ने फिर से पूछा,'सर्जरी के बाद आप होश में आये तब आपको ऐसा खेद नहीं हुआ कि, मैं यहाँ वापस गया, परंतु भगवान के पास नहीं पहुँच पाया?'

स्वामीश्री ने कहा,'नहीं, भगवान अखंड साथ में ही है।'

स्वामीश्री का यह स्पष्ट और त्वरित उत्तर सुनते ही पत्रकार आश्चर्यचकित रह गये।

63. हीरा तो हमारा था

एक देहाती भक्त जिसका जीवन बिल्कुल सामान्य। उसकी बुद्धि भी सामान्य थी और उसकी भाषा भी सामान्य थी। ऐसा हीरा ग्वाला गौशाला में सेवा करता था। परंतु स्वामीश्री उसको मिलते थे और उसके साथ बैठते थे, उसकी बातें भी सुनते थे।

सन् 1997 में उसका अक्षरवास हुआ उसके बाद की यह घटना बड़ी रसप्रद है।

हीरा के अवसान के समाचार सुनकर स्वामीश्री ने गौशाला के संचालक को बुलाकर कहा,'हमें हीरा की तैरहवीं करनी है। उसके अस्थि विसर्जन करने के लिए भी आपको उसके पुत्रों को साथ लेकर

जाना है।' ऐसा कहकर स्वामीश्री ने उसकी सारी उत्तरक्रिया करवायी।

हीरा के तैरहवीं के दिन उसके समग्र समुदाय को भोजन करवाया। इसे देखकर उसके समुदाय के लोग स्वामीश्री से कहने लगे, 'हीरा की सच्चे अर्थ में सेवा तो आपने ही की है। हमारी जाती में सबको बहुत अहोभाव हुआ है कि, प्रमुखस्वामीजी ने हीरा के पीछे, अवसान के बाद का सभी कार्य किया है।'

यह सुनकर स्वामीश्री मात्र इतना ही बोले,'हीरा तो हमारा था।'

तब सभी ग्वालों को हुआ कि, 'प्रमुखस्वामीजी तो हमारे है।'

64. आज कौन-सी दिनांक है?

अमरिका से आये हुए नैमिष को देखते ही स्वामीश्री बोलने लगे,'तेरे पिता का नाम रमेशभाई। उनके पिता भाईलालभाई। उनके पिता चतुरभाई और उनके पिता शामलभाई...'

पांच-पांच पीढी के नाम इसप्रकार शीघ्रता से बोलते हुए स्वामीश्री को देखकर सभी उनकी स्मरणशक्ति को वंदन करते रहे। सबको बहुत आश्चर्य हुआ!

हरिभक्तों से मुलाकात करने के बाद स्वामीश्री पत्रलेखन करने लगे। एक पत्र लिखने के बाद वे एक क्षण के लिए रुक गये और आसपास देखने लगे। यह देख किसी ने पूछा,'क्या कुछ काम है?'

स्वामीश्री ने पूछा,'आज कौन-सी दिनांक है?'

स्वामीश्री के मुख से यह प्रश्न सुनकर सभी आश्चर्यचकित रह गये, क्योंकि आज सुबह ही 92,000 हरिभक्तों की उपस्थिति में उनकी 74 वीं जन्मजयंती धूमधाम से मनाई थी। इस निमित्त कई कलात्मक मालाएँ उनको अर्पण हुई थी, शुभेच्छापत्र अर्पण किए गये थे, परंतु हरिभक्तों की पांच-पांच पीढी याद रखनेवाले स्वामीश्री अपने जन्मदिन की दिनांक भूल गये थे।

कैसी स्मरणशक्ति! कैसी विस्मरणशक्ति!

65. मध्यरात्रि को प्रार्थना...

सन् 1990 की वो रात्रि आधी बीत चुकी थी। सर्वत्र रात्रि का सन्नाटा था। उसमें स्वामीश्री के सेवक की आँख अचानक खुल गई। उनके कान पर 'स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...' की आवाज सुनाई दी।

उनको हुआ कि,'रुम में तो मेरे और स्वामीश्री के सिवा ओर कोई नहीं है, फिर यह आवाज कहाँ से आ रही है?' ऐसा सोचकर वे खड़े हुए तब पता चला कि, स्वामीश्री पलंग पर पालथी लगाकर एकचित्त से धून कर रहे थे।

सेवक ने सोचा,'अभी मध्यरात्रि को यह प्रार्थना किसलिए होगी?' ऐसा सोचकर धून समाप्त हो उसकी प्रतिक्षा करते रहे। करीब आधे घंटे के बाद प्रार्थना पूरी करके स्वामीश्री सोने गये, तब सेवक ने सहारा दिया। स्वामीश्री चोंक गये। उनको लगा कि, 'मैं आधी रात को उठ-उठकर धून करता हूँ वह कोई जान गया!'

सेवक ने पूछा,'आप किसलिए प्रार्थना कर रहे थे?'

स्वामीश्री ने कहा,'भारत में भयंकर अकाल है। लोग पानी के बिना दु:खी हो रहे है। इसलिए वहाँ बारिश हो उसकी प्रार्थना कर रहा था।'

सेवक ने कहा,'परंतु रात को क्यों?'

स्वामीश्री ने कहा,'दिन में सभी मिलने आते है उसमें समय कहाँ मिलता है?'

सेवक ने कहा,'कितने समय से इसप्रकार प्रार्थना करते है?'

स्वामीश्री ने कहा,'जितना हो सके उतना करते है।'

रात्रि के अंधकार में स्वामीश्री का वह करुणासभर नेत्र का प्रकाश सर्वत्र छा गया।

66. हमें ऐसी आदत हो गई है।

एकबार पत्रव्यवहार का कार्य पूर्ण करके स्वामीश्री आराम के लिए खड़े हो रहे थे। उस समय उन्होंने पास में पड़ी हुई टिपोई पर रखे गये चश्मे के स्टेन्ड में अपने चश्मे रखें। उस स्टेन्ड के पास में पड़ा हुआ टेबललेम्प भी स्वयं ने बंद किया। इसे देख एक संत बोले,'आप एक मिनट भी बिना काम के नहीं रहते। आपने स्वयं ने चश्मे रखे और टेबललेम्प भी आपने ही बंद किया। ऐसी छोटी से छोटी सेवा आप करते है।'

स्वामीश्री ने कहा,'यह लाईट बंद करने के लिए किसी को दूर से बुलाना उससे अच्छा कि हमें स्वयं ही कर लेना चाहिए!'

उन संत ने कहा,'परंतु 90 वर्ष की उम्र में तो किसी को बुला सकते है।'

स्वामीश्री ने कहा,'हमें पता है कि, हम इतना काम तो कर सकते है। शास्त्रीजी महाराज तो अंतिम अवस्था तक अपना काम करते थे। योगीजीमहाराज भी करते थे। नजदिक के जो काम हो जो हमसे हो सके, उसे तो हमें करना ही चाहिए।'

इतना कहकर स्वामीश्री ने कहा,'मूल प्रश्न यह है कि, हमें (सेवा करने की) ऐसी आदत हो गई है।' इतना कहकर दूसरी ओर का टेबल लेम्प भी स्वयं ने बंद कर दिया।

67. थोड़ी-सी भी अरुचि नहीं...

स्वामीश्री एकबार शाम को बडौदा पधारनेवाले थे। उस समय स्वामीश्री के बडौदा के कार्यक्रम का आयोजन पूज्य त्यागवल्लभ स्वामी करते थे। उन्होंने ऐसा आयोजन किया था कि, 'स्वामीश्री सीधे ही मांजलपुर में एक हरिभक्त के घर भोजन के लिए पधारें। बाद में उसी क्षेत्र में दो-तीन हरिभक्तों के घर पधरावनी करके

अटलादरा मंदिर पहुँचे और आराम करें।'

परंतु स्वामीश्री को मांजलपुर पहुँचने में शाम के बदले रात्रि हो गई। स्वामीश्री भोजन करने बैठें तब उनके साथ त्यागवल्लभदास स्वामी भी भोजन करने बैठें। उनके मन में चिंता हो रही थी कि, 'स्वामीश्री को आज बहुत देरी हो गई है। और दूसरी ओर हरिभक्तों को पधरावनी के लिए कह दिया है। वे भी प्रतिक्षा कर रहे होंगे। यह बात स्वामीश्री को किस प्रकार बताये ?'

इतने में स्वामीश्री का भोजन पूरा हुआ। सबकी विदाय लेकर वे दरवाजे की ओर थोड़े आगे बढ़े कि, तुरंत त्यागवल्लभदास स्वामी की ओर घूमकर उनको पूछा,'अब क्या कार्यक्रम है ?'

स्वामीश्री ने सामने से ही पूछा इसलिए उनकी चिंता मिट गई और उन्होंने कहा,'बापा दो-तीन हरिभक्तों के वहाँ पधरावनी करने की बात हुई है।'

थोड़ी-सी भी अरुचि दिखाये बिना स्वामीश्री ने कहा, 'चलिए, चलते है।'

... और रात को बारह बजे के आसपास स्वामीश्री पधरावनी के लिए निकले!!

68. तो जीवन अर्पण किया ही है...

एकबार सारंगपुर में भोजन कर रहे स्वामीश्री के समक्ष एक पार्षद ने 'शिक्षापत्री' के श्लोक का मुखपाठ प्रस्तुत किया। उस संदर्भ में अन्य एक पार्षद ने स्वामीश्री से कहा,'गुरु के दर्शन करने जाये तो खाली हाथ ना जायें। ऐसी शिक्षापत्री की आज्ञा है। तो मैं एक भेंट आपको देना चाहता हूँ तो क्या आप स्वीकार करेंगे ?'

स्वामीश्री ने कहा,'यदि ठीक होगा तो स्वीकार करेंगे। भगवान की बात होगी, सत्संग की बात होगी, धर्म-नियम की बात होगी तो स्वीकार करेंगे।'

तब उस पार्षद ने कहा,'मेरा आधा आयुष्य आपको देना है।'

फिर स्वामीश्री ने कहा,'सत्संग की दृढ़ता बराबर रखे वो जीवन अर्पण करने जैसा ही है। नियम-धर्म, आज्ञा-उपासना ये सभी गुण आये तो जीवन अर्पण किया ही है।'

69. स्वाद से परे विभूति

'उस समय मैं संतो की रसोई करता था। तब पूरा संतमंडल फिकी रसोई की रुचिवाला था। योगीजीमहाराज को फिका भोजन चाहिए। तेल-मसालेवाला चटपटा भोजन उनको पसंद नहीं था। संतस्वामी और बालमुकुंद स्वामी भी फिका भोजन ही करते थे। अब बाकी बचे एक प्रमुखस्वामीजी महाराज। वे तीखा खा सकते थे और तीखा हो तो उन्हे अधिक रुचिकर था। परंतु नौ महिने तक जैसी सर्वसामान्य रसोई मुझे आती थी वैसी मैं बनाता था। क्योंकि मैं भी सीख रहा था, परंतु प्रमुखस्वामीजी महाराज ने इस संबंध में कभी नहीं टोका। रसोई में भूल होने का संभव था, परंतु उन्होंने कभी सूझाव नहीं दिया कि, 'आज ऐसा था, वैसा था।' अथवा 'ऐसा करे और ऐसा ना करें।' तथा कोई वस्तु बनाने का छोटा सा सामान्य सुझाव भी नहीं दिया। हम जो कुछ पत्तर में परोसते उसे वे शांति से श्रीजीमहाराज को याद करके भोजन कर लेते थे। उस समय उनका प्रथम परिचय हुआ कि, यह विभूति स्वाद से परे है।'

बी.ए.पी.एस. संस्था की आंतरराष्ट्रीय प्रवृत्ति के संयोजक पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामीजी का यह अनुभव है।

70. जहाँ जाओ वहाँ अक्षरधाम

एक कार्यकर्ता कई वर्षो तक सुरत क्षेत्र में सेवा करके दूसरे क्षेत्र में स्थानांतर कर गये। उनकी पत्नी भी सत्संग की कार्यकर्ता, परंतु

दूसरे क्षेत्र की महिला कार्यकर्ता के साथ उनकी नहीं बनी। इसलिए वे पुनः सुरत जाने की जीद करने लगे। इसके कारण उनके पति परेशान थे।

उनकी यह बात सुनकर स्वामीश्री ने कहा,'ऐसा करेंगे तो इधर-उधर हो जायेगा। मकान बदलना पड़ेगा, फर्निचर बदलना पड़ेगा, घर का सामान इधर लाना पड़ेगा, सबकुछ लाना पड़ेगा। इससे तो अच्छा है स्वभाव ही बदल दें। स्वभाव तो ठीक करना ही चाहिए। चाहे आकाश में जाओ, या स्वर्ग में। वहाँ भी स्वभाव नहीं बदलेंगे तब तक सुख नहीं होगा। वही का वही है। इसलिए स्वभाव का दुःख छोड़ना ही पड़ेगा। सबके साथ रहना सीखना चाहिए। सबके साथ रहकर काम करना चाहिए। यहाँ आ जाये फिर भी यदि स्वभाव होगा तो दूसरे के साथ नहीं जमेगा, तब क्या होगा? एक अक्षरधाम में ही दुःख नहीं है। इसलिए जहाँ जाओ वहाँ अक्षरधाम ऐसा समजियें!'

71. संतुलन

गुण-अवगुण के बीच स्थित पतली भेदरेखा को समझकर जीवन जीना, अर्जुन के मत्स्यवेध से भी अधिक संतुलन की अपेक्षा रखता है। प्रमुखस्वामीजी महाराज उसमें कुशल थे।

उनमें नम्रता थी परंतु कायरता नहीं।

चीजों का विवेकपूर्ण उपयोग करते थे, परंतु कंजुसाई नहीं।

दृढ़ता अधिक परंतु जड़ता बिल्कुल नहीं।

भगवान का भरोसा पूरा था परंतु आलस-प्रमाद बिल्कुल नहीं।

इस संदर्भ में एकबार उन्होंने महत्त्व की, समझने जैसी बात करते हुए कहा था कि, 'भगवान ही कर्ताहर्ता है, परंतु वेही भगवान हमारें में रहकर प्रेरणा देते है और काम करवाते है। अर्थात् 'भगवान सबकुछ करेंगे और भगवान की इच्छा से होगा' - ऐसा मानकर

बैठे नहीं रह सकते। प्रयत्न पूरा करना ही चाहिए। भगवान काम करवाने के लिए प्रेरणा देते है और वही निमित्त बनाते है। इसलिए प्रयत्न तो अवश्य करें और बाद में जब ना हो तब भगवान की इच्छा समझे।'

कैसा सुयोग्य संतुलन!

72. कैसा दर्शन?

एकबार स्वामीश्री खिचड़ी का भोजन ले रहे थे। भोजन करते करते खीचड़ी का अंतिम दाना बचा था। स्वामीश्री चमच से उस दाने को लेने का प्रयत्न कर रहे थे। चमच द्वारा पात्र के किनारे किनारे दाने को खीसकाकर किनारे पर लाये फिर भी वह दाना चम्मच में आने के बदले पत्तर की धार से नीचे कुदने का प्रयत्न कर रहा था। इसलिए स्वामीश्री तुरंत ही उसको वापस पत्तर में डाल रहे थे।

चार-पांच बार इसप्रकार प्रयत्न करने पर भी दाना चमच में नहीं आया। इसलिए स्वामीश्री ने चमच को एक ओर रखकर दाँये हाथ से दाना पकड़कर मुख में रख लिया। पत्तर पूरा साफ हो गया।

यह लीला को देखनेवाले सोचते रहे कि, 'यह कैसा दर्शन था? स्वयं से एक दाना भी नहीं बिगड़ना चाहिए ऐसी स्वामीश्री की भावना का? या योग में आनेवाले व्यक्ति अंतिम लक्ष्य तक ना पहुँचे तब तक उसका उद्धार करना है, ऐसी स्वामीश्री की करुणा का?!'

73. ...वही आराम

स्वामीश्री का सत्संग लाभ लेने के लिए उनके साथ विचरण में जुड़े हुए श्री हर्षदभाई राणा ने एकबार स्वामीश्री से कहा कि,

‘आपके साथ विचरण में हमारा एक महिना और दो दिन हो गये। इतना घूमे उसमें हम थक गये। आपको तो 365 दिन घुमना होता है।’

तब किसी ने कहा,‘रविवार को तो हमें छुट्टी होती है परंतु आपको तो सजा जैसा है। सुबह से शाम तक आप कार्य में ही व्यस्त होते है। इसमें किसे आराम कहे, वही प्रश्न है।’

तब स्वामीश्री बोले, ‘हरिभक्तों को मिले वही आराम। भजन–कथावार्ता हो वही आराम।’

74. यही रीत रखें

स्वामीश्री के समक्ष एक संत ने मजाक करते हुए कहा कि, ‘कईबार मेरे मन में विचार आता है कि, मेरे क्षेत्र में जितने भी मंदिर हुए हैं, उसमें प्रत्यक्ष अथवा परोक्षरुप से मुझसे जो कुछ सेवा हुई उसका पुण्य मुझे कितना मिलेगा?’

स्वामीश्री ने भी मजाक को आगे बढ़ाते हुए बोले,‘वंशपरंपरा तक पुण्य मिलेगा।’ फिर समझ की दृढ़ता करवाते हुए कहे,‘हम सबकुछ करे, परंतु कुछ मिले ऐसी आशा ना रखें। निःस्पृही रहे। ‘मुझ से हुआ है और मुझे हिस्सा मिलना चाहिए।’ ऐसी कोई भी भावना ना रखें। हम कहाँ कुछ करते है? हजारों को लाभ मिले वही ठीक है।’

उस संत ने कहा,‘परंतु हमने काम किया है, इसलिए इच्छा तो रखनी चाहिए की नहीं?’

स्वामीश्री ने कहा,‘यदि इच्छा रखी, तो गये काम से! ये भी ‘मुझे हिस्सा मिलें’ प्रकार की भावना ही हो गई! करनेवालें और प्रेरणा देनेवालें, कर्ताहर्ता भगवान स्वामिनारायण, शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज है। फिर हमारें हिस्से की बात कहाँ से आयेगी?’

उस संत ने कहा,‘परंतु निमित्त तो हम ही कहलायेंगे ना?!’

स्वामीश्री ने कहा,'यदि स्वयं को निमित्त माने तो सेवा निष्फल हो जायेगी। हमें सेवा मिली, वह हमारा बड़ा भाग्य है! सेवा करने में केवल 'भगवान प्रसन्न हो' यही भावना रखें। भगवान स्वामिनारायण, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज ने कार्य किया है – यह भावना रखें। गुरुओं ने भी कभी स्वयं को कर्ता नहीं माना। यह रीत हमें सिखाई है, तो हम भी यही रीत रखें।'

स्वामीश्री के निष्काम कर्मयोग की कक्षा कितनी ऊँची थी!

75. इसलिए हमें चिंता नहीं रहती।

अमरिका की वॉबाश कॉलेज के प्राध्यापक श्री रेमन्ड विलियम्स बी.ए.पी.एस. संस्था और स्वामीश्री को जानने के लिए प्रयत्नशील थे। स्वामीश्री प्रतिदिन सेंकड़ो भक्तों की समस्या का समाधान करते है, यह उनके लिए आश्चर्य का विषय था।

इस संदर्भ में ही एकबार उन्होंने स्वामीश्री से पूछा,'ऐसे देखा जाये तो आपको संसार व्यवहार का कोई अनुभव नहीं है। फिर भी आप कैसे उस विषय में उत्तर देते है?'

स्वामीश्री ने कहा,'भगवान को सारा अनुभव है।'

उसने कहा,'क्या आपको कभी ऐसा होता है कि, प्रश्न का उत्तर कुछ दिया हो और बाद में ऐसा लगे कि, यदि इसप्रकार उत्तर दिया होता तो अच्छा रहता?'

स्वामीश्री ने स्पष्ट कहा,'नहीं, कभी ऐसा नहीं होता है।'

उसने कहा,'मानो की किसी को दुकान लेने की अनुमति दी, और बाद में उसे दुकान में घाटा हुआ हो, फिर दुःख होता है कि, इसके बदले दुकान लेने के लिए मना किया होता तो अच्छा रहता?'

स्वामीश्री ने कहा,'नहीं। भगवान हमें उत्तर की प्रेरणा देते है। भगवान भूत, भविष्य और वर्तमान का जानते है। तो अंत में भक्त का अच्छा ही होगा। इसलिए हमें चिंता नहीं रहती।'

76. अफसोस किसका ?

दिनांक 12-3-1986 को एक पत्रकार ने स्वामीश्री से पूछा कि, 'आपके अफसोस का विषय कौन-सा है ?'

स्वामीश्री ने कहा,'भगवान की इच्छा से काम करते है। सबकुछ उनकी इच्छा से होता है। शायद कोई कार्य नहीं हुआ और नुकसान हो गया तो, वह भी भगवान की इच्छा! इसलिए किसी प्रकार का अफसोस रहता नहीं है।'

77. हमारा घर

एकबार हरीशभाई नामक हरिभक्त ने बोचासण में स्वामीश्री से सीधा ही पूछा, 'आप घर आ रहे है न ?'

स्वामीश्री ने कहा,'कहाँ पर ?'

'आप जब अमरिका आयेंगे तब घर आयेंगे न ?' स्वामीश्री कुछ दिनों बाद अमरिका की धर्मयात्रा पर जानेवाले थे, उस संदर्भ में वे हरिभक्त इसप्रकार पूछ रहे थे।

तब स्वामीश्री ने कहा,'पूरा अमरिका हमारा घर है।' थोड़ी देर के बाद बोले,'पूरी दुनिया नहीं, अनंत ब्रह्मांड हमारा घर है।'

'ईशावास्यमिदं सर्वं...' यह औपनिषदिक मंत्र वातावरण में मानो गुंज उठा।

78. अकेले हो उसके प्यारे

सन् 1974 की विदेशयात्रा के दौरान चंदुभाई के घर स्वामीश्री पधारे थे। यहाँ यजमान के एक अंग्रेज पडोसी स्वामीश्री के पास आ पहुँचे। उनका परिचय प्राप्त करते हुए स्वामीश्री को जानकारी मिली कि, 'उस अंग्रेज व्यक्ति को छोड़कर उनकी संतान चली गई है। वे अकेले ही है। वृद्धावस्था दुःख में गुजार रहे है।'

यह बात जानकर स्वामीश्री द्रवित हो गये। उन्होंने तुरंत ही चंदुभाई से सूचना देते हुए कहा,'आप इस अंग्रेज की अपने परिवारजन की तरह संभाल रखियेगा।'

इसप्रकार, एक अकेले को परिवार का छत्र देकर स्वामीश्री विदाय हुए।

इस बात को दस वर्ष बीत गये। सन् 1984 में स्वामीश्री लंदन पधारे तब वह अंग्रेज स्वामीश्री को मिलने आए और गद्‌गदित होकर स्वामीश्री को कहने लगे, 'आपका खूब खूब आभार। पीछले दस वर्ष से आपके यह हरिभक्त मेरी बहुत देखभाल कर रहे है। आपने मेरी प्रौढ़ अवस्था सुधार दी।'

स्वामीश्री ऐसे कई, कितने अकेले हो उनके प्यारे बने होंगे?

79. अपार सुख

शिखरबद्ध मंदिर में से विदाय लेते समय सामान्यतया स्वामीश्री ठाकुरजी के दर्शन करके सीधे गाड़ी में बैठते है, परंतु उस दिन बोचासण मंदिर में से विदाय लेते समय ठाकुरजी के दर्शन के बाद उनके चरण मंदिर के सभामंडप की ओर चले। सबको आश्चर्य हुआ कि,'स्वामीश्री किस ओर जा रहे है?' सभी उनके पीछे जाने लगे।

इतने में तो स्वामीश्री सभामंडप के एक खंभे के पास बैठकर माला घुमाते हुए वृद्ध, अति गरीब और अंध हरिभक्त के पास जा पहुँचे। वे ठासरा गाँव के निवासी थे।

उनके पास जाकर स्वामीश्री ने कहा, 'मणिभाई, जय स्वामिनारायण!'

प्रज्ञाचक्षु ने परिचय पूछा,'कौन है?'

तब स्वामीश्री ने कहा,'मैं... प्रमुखस्वामीजी!'

यह सुनते ही मणिचाचा तो एकदम अपने हाथ लंबे करके स्वामीश्री के चरण खोजने लगे। उनका गला भर गया। अंध आंखो

में से आंसू बहने लगे।

स्वामीश्री एकदम नीचे झूके और उनके मस्तक पर हाथ रखकर प्रेम से पूछा,'कैसे है ?'

मणिचाचा की आँखों में से श्रावण-भादो बरस रहा था। वे कुछ भी नहीं बोल सके।

थोड़ी देर के बाद उनकी वाणी खुली तब गद्‌गद हृदय से इतना ही बोले,'कल गुरुपूर्णिमा के दिन भीड़ के कारण मुझे स्वामीबापा के व्यक्तिगत दर्शन नहीं हुए थे। उसका मुझे खूब दुःख था। आज सामने से आकर स्वामीबापा ने मुझे अपार सुख दिया!'

८०. स्नेह-संजीवनी

'बापा, आप मेरे घर आयेंगे ?'

देवगढ़ बारिया में बिराजमान स्वामीश्री को मलाव गाँव के चार वर्ष के बालक शंभु ने इसप्रकार निवेदन किया।

आसपास खड़े सभी को यह मांग उचित नहीं लगी, क्योंकि उसके घर-गाँव तक पहुँचने में रास्ता धूल से भरा और गड्ढेवाला था। जो स्वामीश्री के स्वास्थ्य को बिल्कुल अनुकूल नहीं था।

...परंतु स्वामीश्री ने उसका संकल्प पूरा करने का निश्चित कर लिया।

दूसरे दिन राबोड गाँव से घोघंबा गाँव जाते समय उन्होंने गाड़ी मलाव गाँव के मार्ग पर लिवा ली और उस बालक के घर जा पहुँचे। घर भी बालक जैसा छोटा ही था, फिर भी स्वामीश्री उसमें प्रेम से बैठे। ठाकुरजी का पूजन करवाया। आरती भी हुई। परंतु उस समय भागादौड़ी कर रहे शंभु को स्वामीश्री ने नहीं देखा। इसलिए उन्होंने अपने हाथ में ठाकुरजी की मूर्ति रखकर उस बालक के पास फिर से आरती करवायी। एक बालक के जीवन को स्नेह-संजीवनी से भरकर स्वामीश्री विदाय हुए।

81. है कोई नापदंड ?!

शाम को पोने चार बजे स्वामीश्री शौचविधि जाने के लिए तैयार ही थे कि, इतने में एक मुमुक्षु जल्दी से आ पहुँचे और कहा,'बापा! मुझे आपको अकेले में मिलना है।'

स्वामीश्री ने उनका प्रस्ताव सुनकर बोला,'आईये।' फिर वहाँ बैठे और उनकी बात सुनते सुनते शाम के सात बज गये।

परंतु उनके चहरे पर कोई व्यग्रता नहीं थी। वही धीरज और वही प्रेम। सवा तीन घंटे तक शौचविधि की क्रिया को रोककर स्वामीश्री ने उस मुमुक्षु को संतोष दिया।

मुलाकात पूरी करके वे रुम से बाहर निकल रहे थे। इतने में ही दूसरे एक मुलाकाती आ पहुँचे। स्वामीश्री तीन-तीन घंटो से शौचविधि जाने का रोककर बैठे थे। इस परिस्थिति से वे मुमुक्षु अज्ञात थे। इसलिए उसने कहा,'बापा! दो मिनट बात करनी है।'

'आईये। दो मिनट क्या? पांच मिनट बैठे।' ऐसा कहकर उस मुलाकाती के साथ भी कुछ समय तक स्वामीश्री बैठे।

उनको मार्गदर्शन देकर विदाय किया। बाद में शौचविधि करने के लिए स्वामीश्री खड़े हुए तब साढ़े सात बजने आये थे।

साढे तीन घंटे तक शौचविधि रोककर सबको सुनने के पीछे रही हुई स्वामीश्री की करुणा का, क्या है कोई नापदंड ?!

82. छट्ठा मुद्दा

'स्वामीजी! भारत विकासशील देश में से विकसित देशों की सूचि में आये उसके लिए हमने मुख्य पांच क्षेत्रों में प्रगति आवश्यक है, ऐसा निश्चित किया है : 1. शिक्षा और स्वास्थ्य सुरक्षा, 2. कृषि, 3. माहिती और संचार (Information & Communication), 4. भूमिकारूप व्यवस्था Infrastucture 5. आवश्यक टेक्नोलोजी

(Critical technology)। स्वामीजी! हमारा मुख्य प्रश्न यह है कि, हम ऐसे मूल्यनिष्ठ नागरिक किस प्रकार तैयार करे जो इन सभी के उत्तरदायीत्व का वहन करके देश को आगे बढ़ा सके? उसमें आप कुशल है। उसके लिए हमें आपकी राय चाहिए।'

अनेक युनिवर्सिटी द्वारा पीएच.डी. की पदवी से विभूषित, विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक और भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्रीअब्दुल कलाम ने उपर्युक्त शब्दों के साथ विकसित भारत के लिए स्वामीश्री का मार्गदर्शन मांगा, तब स्वामीश्री ने बताया था कि,

'आप पांच मुद्दों के साथ छट्ठा मुद्दा भगवान में श्रद्धा और सभी आध्यात्मिक रुप से तैयार हो, ऐसा मुद्दा भी शामिल करें। अच्छे मनुष्य तैयार करना हो तो उनको पहले भगवान में और शास्त्र में श्रद्धा दृढ़ करवानी चाहिए। जो आध्यात्मिक संत है उनके द्वारा यह दोनों श्रद्धा जागृत होती है। यदि ऐसा हो तो जो समस्या है वह हल हो जायेगी। और जो करने का निश्चित किया है वह सफल हो जायेगा।'

स्वामीश्री ने विकसित भारत का नक्शा बना दिया।

83. मैं माफ कर सकता हूँ

एक व्यक्ति ने आकर व्यवस्थापक संत से बात करते कहा,'मुझे स्वामीश्री से मिलना है।' वह व्यवस्थापक उस व्यक्ति के भूल भरे भूतकाल से परिचित थे। इसलिए उन्होंने बताया कि, 'मैं तुझे स्वामीश्री के साथ मिला दू, परंतु एक बात ख्याल रखना। स्वामीश्री जो कहे उसे बिना बोले सुन लेना। शायद डाट दे या टोके फिर भी उसे सुन लेना।'

मिलने आनेवाले व्यक्ति ने इस संबंध में पूरी सम्मति बतायी, क्योंकि वह उसके लिए ही आया था। स्वयं ने की हुई भूलों के बदले 'लोग मुझे क्या कहेंगे?' इस विचार से वह अब तक सत्संग से दूर रहता था। परंतु स्वयं ने की हुई भूलों से वह दुःखी था।

भूलों का स्वीकार करके, माफी मांगकर वह आज हृदय को हलका करना चाहता था।

जब वह व्यक्ति स्वामीश्री से मिला तब स्वामीश्री ने उससे कहा, 'यह तो कुछ नहीं है, परंतु इससे भी अनंत गुना भूल मैं माफ कर सकता हूँ। कोई समस्या नहीं। परंतु अब सच्चे भाव से मंदिर आना, यदि यहाँ रहा होता तो कितना आगे बढ़ जाता?'

84. क्या वह फोटो भेज दिया?

बडौदा जिले के कुरई गाँव में एक रात को सामान्य कुर्सी पर बैठे हुए स्वामीश्री के आसपास संत-हरिभक्त बैठे थे और साधारण गोष्ठि चल रही थी। उस समुदाय में स्वामीश्री ने ठिकरिया गाँव के हरिजन भक्त छगन को देखा और कहा,'छगन! कीर्तन गाओ।'

छगन को तो स्वामीश्री की यह बात सुनकर आनंद आ गया। वह खड़ा हो गया और उत्साह से कीर्तन गाने लगा। छगन के घर में रोटी पकाने की मिट्टी का तवा भी तीन टूकड़ो में तार से बंधा हुआ था। इसप्रकार वह जीवन निर्वाह करता था। इसका किसी को पता भी ना चलें ऐसे उत्साह से, मस्ती में कीर्तन गा रहा था।

कीर्तन गाने के बाद उसने योगीजीमहाराज के कुछ प्रसंग भी प्रस्तुत किये। उस दौरान स्वामीश्री ने एक फोटोग्राफर को बुलवाया और मानो किसी स्वजन के साथ खड़े हो, इसप्रकार यह अत्यंत गरीब छगन के साथ खड़े रहकर फोटो खींचवाया। छगन तो खुश खुश हो गया।

इस तसवीर के साथ छगन और उसकी भक्ति को अमर करके स्वामीश्री विचरण करते हुए मुंबई पहुँचे। वह फोटोग्राफर भी साथ में थे। उनको देखते ही स्वामीश्री ने याद दिलाया कि, 'वह कुरई गाँव का फोटो छगन को भेज दिया?'

बड़े काम करनेवाले स्वामीश्री छोटे काम को नहीं भूलते।

85. बालस्नेही

दिनांक 10-1-2005 के दिन सुबह मुंबई में स्वामीश्री को मिलने 125 से अधिक मुलाकाती कतार में खड़े थे। मुलाकातो के उस महाकुंभ के बाद कुछ महत्व की मीटींगों में स्वामीश्री को उपस्थित रहना था। ऐसे व्यस्त कार्यक्रमों में एक मुलाकाती के साथ आये हुए बालक ने अपनी हथेली में माला रखकर स्वामीश्री के समक्ष धरते हुए कहा,'बापा! यह माला प्रसादीभूत कर दीजिए।'

स्वामीश्री ने उस माला पर अपना हाथ रखकर उसे प्रसादीभूत कर दिया। परंतु वह बालक तुरंत ही बोला, 'इसप्रकार नहीं। एक माला घुमाकर प्रसादीभूत कर दीजिए।'

सबको बालक की यह बात ठीक नहीं लगी। परंतु स्वामीश्री ने पीछे खड़ी मुलाकातीओं की लम्बी कतार और महत्व की मीटिंगों की परवाह ना करके शांति से एक माला घूमाकर बाद में वह माला जब बालक के गले में पहना दी। तब उस बालक के आनंद की सीमा ना रही और यह अद्भुत दृश्य देखनेवालें भक्त भी दंग रह गये।

86. पूरा जीवन सार्वजनिक

सन् 1988 की स्वामीश्री की विदेशधर्मयात्रा में जुड़े हुए सहप्रवासी संतो को स्मृति रहे इस हेतु से हरिभक्तों ने प्रत्येक संत का स्वामीश्री के साथ व्यक्तिगत फोटो खींचवाने का आयोजन किया था। एक के बाद एक संत के साथ स्वामीश्री का फोटो खींचवा रहे थे। उसमें खड़ाऊ पहननेवाले एक संत की बारी आयी। इसलिए उन्होंने स्वामीश्री को भी खड़ाऊ पहनकर फोटो खींचवाने की बिनती की।

तब स्वामीश्री ने बताया कि, 'मैं कभी खड़ाऊ नहीं पहनता, फिर

आज क्युं पहनुं ? बेकार का दिखावा क्यों करें ?'

'मुझे दंभ करना पहले से ही पसंद नहीं है...', 'हमारा पूरा जीवन सार्वजनिक जैसा है। कोई प्राईवेट नहीं है...', 'जो दंभ करता है उसके जैसा हमें नहीं आता है...' – इसप्रकार के स्वामीश्री के विधान ऐसे प्रसंग पर हमें विशेष समझ में आते है।

87. कोई आदत नहीं पड़ी...

सन् 1980 में स्वामीश्री के मोतिबिंद का ऑपरेशन करवाया गया था। ऑपरेशन के बाद आसानी रहे इसलिए थोड़े दिनों के लिए, स्वामीश्री के लिए कुर्सी–टेबल पर भोजन करने की व्यवस्था रखी गयी थी।

इस प्रकार एकबार वे भोजन ले रहे थे। उस समय सामने दर्शन करने बैठे हुए एक दर्शनार्थी ने स्वानुभव का वर्णन करते हुए स्वामीश्री से कहा,'मैं एकबार इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती हुआ था। तब कुर्सी टेबल पर भोजन लेता था। तो अब मुझे उसकी आदत पड़ गई है। अभी भी ऐसी इच्छा रहती है कि, कुर्सी हो तो अच्छा! आपको भी इसप्रकार भोजन करने की आदत नहीं हो जाएगी न!'

स्वामीश्री ने कहा,'मुझे आज तक कभी, किसी बात की आदत नहीं हुई। मुझे पहले से ही किसी बात का बंधन नहीं कि, ऐसा चाहिए, वैसा चाहिए! भगवान की इच्छा से जो कुछ मिल जाये उससे चला लेते है।'

88. नदी के नीर के समान

अमरिका में 150 शाखावाली एक बेन्क के चेरमेन श्री भरतभाई जब स्वामीश्री को मिलने के लिए आये तब वे धन्य हो गए थे।

बात ऐसी थी कि, कुछ दिन पहले वे दो-तीन शाखा की मुलाकात लेकर घर पहुँचे तब उन्होंने अपनी पत्नी से सहज बातचित में कहा था कि, 'अब काम होता नहीं है, थकान बहुत लगती है।'

उस समय उस गृहिणी ने प्रमुखस्वामीजी महाराज का एक पुस्तक उनके समक्ष रखते हुए कहा कि,'यह देखिए! प्रमुखस्वामीजी महाराज इतनी आयु में (84 वर्ष) भी कितना विचरण करते है और थकते नहीं है और आप तो इस उम्र में थक जाते हो? उनके जीवन में से इतनी तो प्रेरणा लीजिए।'

...और स्वामीश्री की यह बात जानकर वे उत्साहित हो गये। अपने जीवन में जोश और उत्साह भरनेवाले प्रमुखस्वामीजी महाराज का आभार व्यक्त करने के लिए ही वे आज आये थे।

नदी के नीर कहाँ, कब, कितनों की प्यास किस प्रकार बुझाते हुए बहते है, उसे जानने के लिए कौन समर्थ है?

अनेक संस्थाओं में उच्च पद पर रहकर कार्य करनेवाले प्रसिद्ध अर्थशास्त्री श्री कामथ भी कहते है कि, 'प्रमुखस्वामीजी महाराज मकराणा गये और वहाँ कठिन परेशानीओं के बीच, काम को पूरा किया उस प्रसंग को मैने मेरे जीवन का सिद्धांत बना दिया है। चाहे कैसे भी विघ्न आ जाये परंतु पीछे हटना नहीं है। यह मैं उस प्रसंग में से सीखा हूँ।'

89. जन्म भी नहीं और मृत्यु भी नहीं

'आपको अभिनंदन कहने में मुझे देरी हो गई है, परंतु मुझे अभिनंदन देना है।' अमरिका से फोन करके एक भक्त ने स्वामीश्री से इसप्रकार बात कही।

दिनांक 13-12-2010 के दिन स्वामीश्री का 90 वाँ जन्मजयंती दिन बीत चूका था। उस भक्त ने दिनांक 21-12 के दिन स्वामीश्री को यह फोन किया था। उस संदर्भ में वे कह रहे थे कि, 'आपको

अभिनंदन कहने में मुझे देरी हो गई है, परंतु मुझे अभिनंदन देना है।'

उनकी यह बात सुनकर स्वामीश्री बोले,'हम तो अभिनंदन से परे है। हमारा जन्म भी नहीं और मृत्यु भी नहीं है। हम सुखरुप है।'

उस भक्त ने कहा,'चाहे भले आपको तो ऐसा नहीं है परंतु हमें तो कहना चाहिए ना!' वे भक्त इसप्रकार प्रतिभाव दे रहे थे, इतने में उनके पास बैठे हुए संत फोन में बोले,'बापा! आपको हेपी बर्थ डे।'

यह सुनकर स्वामीश्री ने पुनः दोहराया कि, 'अरे, अभी तो मैने उसको बात बतायी कि, हम तो आत्मारुप है, सुखरुप है।'

90. जरुरत नहीं है...

दिनांक 11-7-2002 के दिन प्रसिद्ध अखबार 'टाईम्स ऑफ इन्डिया' के पत्रकार श्री एस.बालक्रिश्नन स्वामीश्री की मुलाकात के लिए आये। वे अहोभाव से युक्त थे। बात-बात में उन्होंने कहा,'प्रमुखस्वामीजी महाराज! You are a spiritual engineer. आप एक आध्यात्मिक अभियंता है... आपने कितना अद्‌भुत कार्य किया है! देश के प्रथम उद्योगपति ने जो काम किया है उससे भी हजार गुना काम आपका है। उनका काम तो व्यावसायिक और औद्योगिक क्षेत्र तक सीमित है। जबकि आपके कार्य में से असंख्य लोगों को प्रेरणा मिलती है, जागृति आती है और धर्म के मार्ग पर चलते है... मुझे ऐसा लगता है कि, आपको 'भारतरत्न' का ईल्काब मिलना चाहिए... जोकि आप 'भारतरत्न' ही है। परंतु अधिकृत मोहर - ऑफिशियल स्टेम्प लगना चाहिए।'

उनकी यह बात सुनकर सामने दीवार पर लगी मूर्ति की ओर निर्देश करके स्वामीश्री ने कहा,'ये भगवान स्वामिनारायण और योगीजीमहाराज है। उन्होंने ऐवोर्ड दिया है उसमें मुझे आनंद है और संतोष है। इस लोक के अवॉर्ड की मुझे आवश्यकता नहीं है।'

91. यहाँ नहीं देंगे तो चलेगा।

सन् 1987 में गुजरात में हुए भयंकर अकाल में सहायता करने के लिए बी.ए.पी.एस. संस्था द्वारा पशुकल्याण केन्द्र खोले गये थे। उसमें पशु की एक मानव के समान देखभाल की जाती थी। आयोजन में वैज्ञानिक अभिगम और कार्यवाही में सेवा की भावना के कारण जो कोई केटलकेम्प देखने आते थे, वे उससे प्रभावित हो जाते थे।

मुंबई के एक दानवीर सज्जन को इस बात का पता चला। वे स्वामीश्री के पास आ पहुँचे और कहा,'मुझे आपकी संस्था द्वारा चलते केटलकेम्प में एक लाख रुपये देने है।'

परंतु स्वामीश्री ने उनको बताया कि, 'यह पैसे अमरेली, गढडा, बोटाद आदि स्थानों में भी अन्य संस्थाओं द्वारा केटलकेम्प चलते है उसमें दीजिए।'

स्वयं की संस्था में ही द्रव्य इकट्ठा हो और अन्य गौशालाओं में पशु भूख से मरने नहीं चाहिए। - स्वामीश्री की यह भावना थी।

परंतु उस सद्गृहस्थ ने कहा,'नहीं! स्वामीजी! मुझे आपके केटलकेम्प में ही देना है। उसमें मुझे विश्वास है। अन्य जगह पर के दान का क्या होगा उसका क्या पता?'

परंतु स्वामीश्री ने उनको समझाकर वह पैसे अन्य स्थानों में दान के रुप में दिलवाये थे।

इसी प्रकार मुंबई के एक क्षेत्र में चलते हुए साई सत्संग मंडल ने ट्रेन में भजन-कीर्तन करके लाख रुपये इकट्ठे किये थे। उस मंडल के मुख्य व्यक्ति यह दान लेकर स्वामीश्री को देने आये तब स्वामीश्री ने उन्हे भी कहा था कि, 'आप गढाळी गाँव के है तो गढडा की गौशाला में मदद करें। यहाँ नहीं देंगे तो चलेगा।'

प्रतिदिन लाख रुपये के खर्च से संस्था के केटलकेम्प चलते थे, फिर भी स्वामीश्री की कैसी परोपकारी भावना है!

92. केवल एक ही वाक्य

‘मैं और मेरे पत्नी हमारे लड़के को कह-कहकर थक गये थे, फिर भी वह टी.वी. देखना छोड़ता नहीं था। परंतु पिछली बार आपने केवल एक ही वाक्य कहाँ कि, ‘टी.वी. न देखें।’ और उसने तत्काल टी.वी. देखना बंद कर दिया।’ वॉशिंग्टन में रहते एक पिता ने इस प्रकार स्वानुभव की बात स्वामीश्री के समक्ष कही थी।

‘पहले मुझे स्वाद बहुत था। उसमें भी जब मैं आम को देखता तब मुंह में पानी आने लगता था। यदि कोई मुझे न दें तो उस पर मुझे बहुत गुस्सा आता था। मुझसे रहा नहीं जाता था। परंतु जब आपने कहा कि, ‘अधिक आम न खायें।’ तब से उसे खाने का मन ही नहीं होता है। आपके उस एक वाक्य का यह प्रताप है। इसप्रकार सभी दोष भी निकाल दीजिएगा।’ त्यागाश्रम में साधना कर रहे एक त्यागी ने एकबार यह स्वानुभूति स्वामीश्री को बताई थी।

‘मेरी युनिवर्सिटी में पढ़ाई शुरु हुई। सत्संग में आने से निश्चय तो था कि, बाहर के वातावरण में आकर्षित नहीं होना। परंतु वहाँ जो होनेवाला था वह हो गया। मैं कुसंग में फंस गई और उसके कारण परिक्षा में फैल हुई। खर्च निकालने के लिए पूरी गर्मी का मौसम नौकरी करनी पड़ी। मन में दुःख और पछतावा होता था। उसमें आपका प्रवचन सुना तब उसमें बात आयी कि, ‘आज्ञा में सुख है।’ आपका यह एक ही वाक्य मेरे जीवन में परिवर्तनरुप बन गया। फिलहाल मैं पीएचडी कर रही हूँ। वह आपके उस एक वाक्य का ही प्रताप है।’ इंग्लेन्ड की एक युवती ने स्वामीश्री को लिखकर अपनी यह हकीकत बताई थी।

स्वामीश्री के केवल एक-एक ही वाक्य! किंतु कितनी गहरी, साकारात्मक और दूरोगामी असर करते है!!

९३. अपरिचित चिरपरिचित

स्वामीश्री के व्यक्तित्व से नैरोबी के मेयर श्री नाथन कहारा इतने प्रभावित हो गये थे कि, उन्होंने नैरोबी सिटी काउन्सिल में स्वामीश्री को विशिष्ट क्रेस्ट देकर सम्मान करने का पूरा समारोह आयोजित किया था। उनको इतने से संतोष नहीं हुआ तो मंदिर से सिटी काउन्सिल के संकुल तक आने-जाने के लिए भी अपनी ही गाड़ी भेज दी थी।

सम्मान समारोह धूमधाम से संपन्न हुआ। नैरोबी के राजद्वारी संकुल में इसप्रकार का कार्यक्रम शायद पहली बार ही था। भाषा, धर्म, देश, जाति आदि से बिल्कुल भिन्न ऐसे यह आफ्रिकन नेताओं - नागरिको ने स्वामीश्री में क्या देखा कि, स्वामीश्री उन सभी के प्यारे बन गये?!!

समारोह के बाद स्वामीश्री को लेकर मंदिर आने के लिए गाड़ी वापस आ रही थी तब ऐसी महान विभुति को स्वयं ले जा रहा है इस विचार से मेयर का ड्राईवर भी खुश खुशाल था। शरीर में बढ़े हुए बुखार को नापने के लिए थर्मोमीटर की खोज हुई है, परंतु मन में उछलते आनंद को नापने के लिए ऐसा कोई उपकरण अस्तित्व में नहीं है। यदि वह शायद होता तो उसका नाप आज आसमान तक पहुँच गया होता, ऐसी उस ड्राईवर की स्थिति थी।

उसमें भी स्वामीश्री ने दुभाषिया की मदद से उस ड्राईवर के साथ वार्तालाप शुरु किया। उसके व्यक्तिगत-सांसारिक जीवन की जानकारी प्रेम से पूछी। इसलिए ड्राईवर तो आश्चर्यचकित हो गया कि, 'ये कैसे मेहमान! इतने थोड़े समय में मेरे जीवन से कितने निकट आ गये! मैं कई वर्षो से मेयर और महानुभावों को ले जाता हूँ - और लाता हूँ, परंतु मेरे में ऐसी रुचि कितनो ने लीं? वे मेरे साथ ही बैठते थे। परंतु मेरी दरकार किसको थी? और ये

स्वामीश्री... !!'

आज पहली बार यह ड्राईवर अपनी व्यक्तिमत्ता का गौरव महसुस कर रहा था। उसका रोमरोम पुलकित हो गया था। वह आनंद में आकर स्वामीश्री से कहने लगा : 'स्वामीजी ! क्या आपके पास समय है ? यदि समय हो तो मैं इस मोटर में आपको पूरा नैरोबी दिखाना चाहता हूँ।'

सिर्फ आने-जाने में ही यह अपरिचित मानो चिरपरिचित हो गया।

94. आपके साथ काम करना है...

दिनांक 6-11-2005, जब दिल्ली स्थित अक्षरधाम का उद्‌घाटन हुआ, यह दिन एक सीमाचिह्‌नरुप बन गया।

उस समारोह में अतिथिविशेष के रुप में उपस्थित भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम ने स्वामीश्री को बताया कि,

'मैं जब से अक्षरधाम में आया हूँ तब से मुझे एक प्रश्न सता रहा है कि, लाखो लोगों द्वारा पांच वर्ष में इतना भव्य और दिव्य कार्य किस प्रकार हो सकता है ? परंतु यहाँ मुझे उसका उत्तर मिल गया कि, 'स्वामिनारायण भगवान' ने आपकी आत्मा में संपूर्ण प्रवेश किया है और उसमें से पूरे अक्षरधाम का साहजिक सर्जन हो गया है।'

मैने जब अक्षरधाम देखा और आपका कार्य देखता हूँ तब मुझे होता है कि, मुझे आपके साथ काम करना है, जिससे समृद्ध, सुरक्षित और आध्यात्मिक भारत तैयार हो। आप संपूर्ण आध्यात्मिकता का पुंज हो। आपके पास इतनी दिव्य शक्ति है कि, यह काम देखकर मुझे लगता है कि, इस दुनिया में सबकुछ संभव है। इसलिए मुझे आपके साथ मिलकर काम करना है।'

95. उसे संत कहते है...

आज स्वामीश्री पर भावनगर जिले के एक गाँव से पत्र आया था। पत्र लिखनेवाले को अपने खेत में नया कुआँ बनाना था। कुआँ कहाँ करना उसके मार्गदर्शन के लिए उसने जमीन का नक्शा भी पत्र के साथ भेजा था।

स्वामीश्री ने करीब पांच मिनट तक उस नक्शे का ध्यानपूर्वक अभ्यास किया और बाद में उस नक्शे में एक निश्चित स्थान पर निशान करके वहाँ कुआँ बनाने के लिए कहा।

इसी प्रकार आहवा (डांग) के एक गाँव में से किसी आदिवासी ने भी 'खेत में ट्युबवेल कहाँ करे?' पत्र द्वारा पुछवाया था और साथ में खेत का नक्शा भी भेजा था। इसके लिए भी स्वामीश्री ने पांच मिनट का समय निकाला और बाद में नक्शे पर निशान करके उस जगह ट्युबवेल करने के लिए कहा।

स्वामीश्री के यह दर्शन करनेवाले को संत की एक परिभाषा याद आ गई कि,'जिस के पास छोटे से छोटे व्यक्ति के, छोटे से छोटे काम के लिए भी समय हो उसे संत कहते है।'

96. एक अनोखा विदाय समारोह

सन् 1984-85 में गुजरात में अनामत आंदोलन चल रहा था। लगातार आठ महिने से भडकी हुई आंदोलन की आग से प्रजा बहुत परेशान थी। उस समय सबके लिए आशा का एक किरण स्वामीश्री थे। वे गुजरात की शांति के लिए प्रचंड पुरुषार्थ कर रहे थे।

इसके लिए वे अहमदाबाद स्थित बी.ए.पी.एस. मंदिर में सरकार के अग्रणी तथा पुलिस अधिकारीओं से मिले। गुजरात के एक पूर्व मुख्य न्यायमूर्ति का भी अभिप्राय जाना। हिन्दु, मुस्लिम, इसाई,

यहूदी, जरथोस्त आदि धर्मगुरुओं को मंदिर में बुलाकर शांति का संदेश भी जनता को दिलवाया।

इस सिलसिले में एक दिन आंदोलन के नेता स्वामीश्री को मिलने आये थे। उसी दिन शाम को आगामी विदेशयात्रा निमित्त स्वामीश्री का विदाय समारोह भी रखा गया था। हजारो हरिभक्त उसके लिए एकत्रित हुए थे। यह विदाय समारोह असाधारण इसलिए था कि, इसके बाद होनेवाली विदेशयात्रा में लंदन में स्वामीश्री की सुवर्णतुला होनेवाली थी।

परंतु गुजरात की शांति के लिए स्वामीश्री आंदोलन के नेताओं के साथ मीटिंग में बैठे थे, उस मींटिग का समय बढ़ता गया। इस ओर विदाय समारोह में स्वामीश्री के आशीर्वाद देने का समय आ गया। इसलिए सभा संचालक स्वामीश्री को बुलाने आये। परंतु स्वामीश्री ने उनको थोड़ी प्रतिक्षा करने के लिए कहा। संचालक दूसरी बार आये तब भी स्वामीश्री ने यही कहा।

आंदोलन के नेता समारोह की महत्ता समझते थे। इसलिए संचालक तीसरी बार बुलाने आये तब उन्होंने सामने से सभा में जाने के लिए बिनती की। परंतु स्वामीश्री ने कहा,‘गुजरात की समस्या का निराकरण हो और शांति स्थापित हो जाये उसमें हमारा समारोह आ गया।’

...और वह मीटिंग चालु रही। स्वामीश्री का विदाय समारोह स्वामीश्री की उपस्थिति के बिना ही समाप्त हुआ!

पूरी दुनिया में शायद ऐसा अनोखा विदाय समारोह दूसरा कोई नहीं हुआ होगा।

‘दुसरो के सुख में हमारा सुख।’ यह स्वामीश्री का जीवन संदेश इस विदाय समारोह में सबको बिना बोले समझ में आ गया।

97. इसमें कोई समस्या नहीं होगी!

प्रगति के पंथ पर विकासशील बी.ए.पी.एस.संस्था को देखकर एक जिज्ञासु ने प्रमुखस्वामीजी महाराज से पूछा,'आप (बी.ए.पी.एस.) संस्था को सौ वर्ष के बाद कैसी देखते है?'

तब प्रमुखस्वामीजी महाराज ने आर्षदर्शन करते हुए बताया कि,

'यह तो भगवान और संत का कार्य है। शास्त्रीजी महाराज ऐसे समर्थ पुरुष थे और उन्होंने जो कुछ किया है उसे भविष्य का बहुत बड़ा विचार करके ही किया है। हजारों वर्ष के बाद का भी विचार किया है। शास्त्रीजी महाराज साक्षात् भगवान का स्वरूप थे। इसलिए उनको तो प्रत्येक वस्तु का संपूर्ण ज्ञान था। त्रिकालज्ञानी कहो, दिव्यदृष्टि कहो, जगत की दृष्टि से कहो तो वे सबसे बुद्धिशाली थे। उन्होंने इस संस्था का स्थापन किया है।

साथ में योगीजी महाराज जैसे पुरुष ने संस्था की नींव मजबूत कर दी है। उन्होंने संत बनाये, बाद में उनके संकल्प से संत बढ़े। ऐसा होता है कि, सही में अब इस संस्था का कार्य अच्छी तरह चलेगा। उसमें किसी प्रकार की समस्या नहीं आयेगी। धर्म, ज्ञान, वैराग्य, भक्तियुक्त सभी संतों का जीवन है। भक्तों भी ऐसे निष्ठावान और समर्पित है। इसलिए संस्था दृढ़ होगी। मूलतः भगवान का कार्य, भगवान करते है, इसलिए संस्था का विकास भलिभांती होगा। क्योंकि करनेवाले पुरुष की दीर्धदृष्टि थी। कोई ना कोई पुरुष बाद में रहेंगे, जिसके कारण यह संस्था हमेंशा के लिए सौ वर्ष के बाद या उसके बाद के वर्षो में भी भली-भांती अच्छी तरह से चलेगी ऐसा विश्वास है। इसमें कोई समस्या नहीं होगी!

98. उसमें सबकुछ आ गया...

'आप सागर के समान अगाध और विशाल है, परंतु सागर तो खारा है, जबकि आपमें तो केवल मिठास है। इसलिए आप सागर जैसे नहीं है... आप वृक्ष के समान परोपकारी है, परंतु वृक्ष तो एक जगह रहकर परोपकार करता है, जबकि आप तो प्रत्येक जगह जाकर परोपकार करते है। इसलिए आप वृक्ष जैसे नहीं है...'

विद्यानगर के छात्रावास में रहते एक युवान ने इसप्रकार यथार्थता और विसंगति का उल्लेख करके एक लेख तैयार किया था। स्वामीश्री के समक्ष वह लेख प्रस्तुत करके उन्होंने स्वामीश्री से ही पूछा कि,'आप ही बताईये कि, आप कौन है?'

स्वामीश्री ने युवक को सामने प्रश्न पूछा कि,'आज तक सत्संग करके तूने क्या निश्चय किया है?'

'मुझे तो कुछ खयाल नहीं आता है। मैने तो मेरे मन में जो आया वह बताया।' युवान की इस बात का प्रतिभाव देते हुए स्वामीश्री कुछ बोले नहीं, भोजन करते रहे। इसलिए उस युवान ने फिर से पूछा,'बोलिये, मेरे प्रश्न का उत्तर क्या है? आप कौन है?'

स्वामीश्री ने बताया,'अक्षर का... भगवान का स्वरूप है। उसमें सबकुछ आ गया।'

99. श्रेष्ठ पल

दिनांक 12-7-1994 के दिन डलास में बालकों - किशोरों ने स्वामीश्री से पूछा था कि,'आपके लिए पूरे दिन में श्रेष्ठ पल कौन-सी है?'

स्वामीश्री ने बताया कि, 'महाराज (स्वामिनारायण भगवान) के साथ ही चौबीस घंटे की सभी पल है। इसलिए सभी पल श्रेष्ठ है।'

100. हम तो सेवक है...

'आप तो साक्षात् ईश्वर है।' दिल्ली के अक्षरधाम को देखकर प्रभावित हुए एक महानुभाव ने स्वामीश्री के प्रति अहोभाव से उपरोक्त वाक्य कहा था। परंतु यह सुनते ही स्वामीश्री ने कहा था कि,'नहीं...नहीं... हम तो सेवक है।'

एकबार लंदन के श्रीकृष्णमूर्ति को जब सत्संगी युवानो को भोजन करवाने की इच्छा हुई तब उन्होंने उनकी भाषा में स्वामीश्री से पूछा कि,'बापा! कौन-सी पार्टी दूं?' (अर्थात् भोजन में क्या खिलाउँ?)

स्वामीश्री ने कहा,'भगवान की जो इच्छा हो।'

तब उस युवान ने कहा,'आप ही हमारे भगवान है। आप जैसा कहें वैसा करुं...'

जब वह युवान इस प्रकार बोला तब बीच में ही उसको रोकते हुए स्वामीश्री बोले, 'भगवान तो एक स्वामिनारायण है, हम तो उनके दास है, भक्त है।'

अटलादरा में स्वामीश्री के आशीर्वाद लेने आये एक चिकित्सक श्री हेमंतभाई ने स्वामीश्री से बताया कि, 'मैं तो 'जय प्रमुखस्वामीजी' बोलकर ओपरेशन करता हूँ और वह 100 प्रतिशत सफल होता है।'

तब स्वामीश्री ने कहा, 'पहले 'जय स्वामिनारायण' बोले। हम तो सेवक है।'

• • •